WHAT IS CHRISTIANITY?

By

Joel Stephen Williams

Hindi Translation
By

Sunny David

Published by

CHURCH OF CHRIST
Post Box No. 3815
New Delhi-110049

Printed at
Guide Offset Printers
DSIDC, Kirti Nagar
New Delhi

विषय-सूची

मसीहीयत क्या है?	1
मुक्ति की आवश्यकता	3
स्वर्ग से आया मुक्तिदाता	8
मसीह का जन्म	10
मसीह का जीवन	13
मसीह की शिक्षाएँ	17
यीशु मसीह की पवित्रता	20
प्रायश्चित	23
मसीह का जी उठना	28
अनुग्रह से उद्धार	31
विश्वास	35
मन-फिराना	38
आज्ञा-मानना	40
स्वेच्छा	42
बपतिस्मा	45
मसीही जीवन	52
कलीसिया	58
सेवा तथा सुसमाचार-प्रचार	66

उपासना	69
भविष्य	77
त्रिएक	85
पवित्र-आत्मा और आश्चर्य-कर्म	88
पवित्र-शास्त्र	92
बाइबल की पुस्तकों का सारांश	96
अन्त में	103

मसीहीयत क्या है?

मसीहीयत क्या है? इस पुस्तक को मुख्य रूप से पाठक को यह जानकारी देने के लिये लिखा गया है कि एक मसीही किस तरह से बना जा सकता है, और उसके बाद एक अच्छा विश्वासी मसीही जीवन किस प्रकार से व्यतीत किया जा सकता है। इस पुस्तक में हम उस मसीहीयत के बारे में देखेंगे जिसे पहली शताब्दी में प्रेरितों के समय में माना जाता था। इस पुस्तक में आरम्भ की उसी मसीहीयत को दर्शाने का पूरा प्रयत्न किया गया है। मसीहीयत के आरम्भ के बाद के दो हज़ार वर्षों में अनेक रीति-रिवाजों को जोड़कर आज इसे एक नए रूप में पेश किया जा रहा है। कुछ अनुचित और गलत धारणाएँ भी उसमें जोड़ी गई हैं, जिनका वास्तविक मसीहीयत से कोई सम्बन्ध नहीं है।

आज की मसीहीयत में जिन रीति-रिवाज़ों को माना और अपनाया जा रहा है उन्हें देखकर बहुतेरे लोग उलझन में पड़कर सोचते हैं कि यह सब क्या है? शायद आप भी कुछ ऐसे ही लोगों के सम्पर्क में कभी आए होंगे जिनके जीवन और कामों को देखकर आपने सोचा होगा कि मसीही लोग सही नहीं हैं। यदि ऐसा है, तो आपको यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिए, ताकि आप जानें कि वास्तव में मसीहीयत क्या है। मसीहीयत को ठीक तरह से समझने के लिए बाइबल के नए नियम के दृष्टिकोण से मसीहीयत को देखने की आवश्यकता है। उन लोगों के जीवनों और कामों के द्वारा मसीहीयत का मूल्यांकन न करें जो अपने आप को मसीही कहते हैं, पर उनमें से अधिकतर उस मसीहीयत का पालन नहीं करते जिसका

वर्णन हमें बाइबल के नए नियम में मिलता है। गलत और झूठी शिक्षाओं के कारण भी अनेकों लोग आज बाइबल की सच्ची मसीहीयत से दूर हैं। हर एक व्यक्ति जो आज अपने आपको मसीही कहता है, वास्तव में मसीही कहलाने के योग्य नहीं है। इसलिये मसीहीयत को ठीक से समझने के लिये यीशु मसीह को, जो मसीहीयत का संस्थापक है, समझने की आवश्यकता है। यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं के द्वारा ही मसीहीयत का मूल्यांकन करें, मनुष्यों के जीवनों के द्वारा नहीं, क्योंकि मनुष्यों में खोट हो सकता है, पर वोह जो मसीहीयत का संस्थापक है, उसमें और उसकी शिक्षा में कोई दोष नहीं है।

मुक्ति की आवश्यकता

मसीहीयत का सम्बन्ध उन लोगों से है जो 'मसीही' कहलाते हैं। (प्रेरितों 11:26; 26:28; 1 पतरस 4:16)। एक मसीही वोह है जो यीशु मसीह का अनुसरण करनेवाला है। किन्तु, मसीही होने की आवश्यकता क्यों है? इस बात का जवाब यह है; क्योंकि हमें पाप से मुक्ति की आवश्यकता है। और पाप से मुक्ति की आवश्यकता को समझने के लिये हमें यह समझने की ज़रूरत है कि हम सब ज़िम्मेदार प्राणी हैं और हम सबको परमेश्वर को अपने-अपने जीवनों का लेखा देना है।

मनुष्य, एक पशु के समान, केवल शरीर ही नहीं है। किन्तु मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है, जिसके भीतर एक "आत्मा" है। (प्रेरितों 7:59; 1 कुरि. 2:11; 1 थिस्स. 5:23; याकूब 2:26)। आरम्भ में परमेश्वर ने सब कुछ बनाया था (उत्पत्ति 1:1), परन्तु मनुष्य को परमेश्वर ने "अपने स्वरूप" पर बनाया था। (उत्पत्ति 1:26,27; कुलु. 3:10; याकूब 3:9)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने मनुष्य को बुद्धि और समझ दी है। हम समझ सकते हैं और विश्वास कर सकते हैं कि एक सर्वशक्तिमान "परमेश्वर" है जिसने हमें बनाया है। हम सही और गलत को समझ सकते हैं। हम अपनी गलती को अनुभव कर सकते हैं, और जानते हैं कि अच्छाई और बुराई क्या है। हम परमेश्वर की महानता को समझकर उसके प्रति अपने आदर और सम्मान को व्यक्त कर सकते हैं। हम परमेश्वर की भक्ति और उपासना करते हैं; और वास्तव में पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सब जगह मनुष्यों के भीतर परमेश्वर की

आराधना करने की इच्छा है। पर हम परमेश्वर की इच्छा को जानकर उसकी इच्छा का पालन भी कर सकते हैं। (मत्ती 5:48; इफि. 4:21-23; 1 पतरस 1:14-16)।

प्रेरित पौलुस जब यूनान के अथेने नगर में गया था, तो वहाँ उसने पाया था कि वहाँ के निवासी "अत्यन्त धार्मिक" स्वभाव के थे (प्रेरितों 17:22)। उन्होंने अनेक देवताओं के सम्मान में बेदियां बना रखीं थीं, जिनमें से एक पर लिखा था "अनजाने ईश्वर के लिये"। (प्रेरितों 17:23)। तब पौलुस ने उन्हें सच्चे परमेश्वर के बारे में इन शब्दों में बताया था :

> "जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया है, वोह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। और न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वोह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास के सिवानों को इसलिये बाँधा है, कि वे परमेश्वर को ढूंढें, और कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं तौभी वोह हम में से किसी से दूर नहीं! क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं।" (प्रेरितों 17:24-28)।

परमेश्वर क्योंकि हमारा सृजनहार है, इसलिये हम उसके प्रति उत्तरदायी हैं। (यशायाह 43:7; प्रकाशित. 4:11)। अथेने के लोगों से पौलुस ने यह भी कहा था कि एक दिन परमेश्वर उनका न्याय करेगा : "अब वोह हर जगह पर सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है, क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वोह सारे जगत का धार्मिकता के साथ न्याय करेगा।" (प्रेरितों 17:30)। परमेश्वर ने क्योंकि सही और गलत को समझने के लिये हमें बुद्धि दी है, इसलिये हम उसके प्रति उत्तरदायी हैं। पौलुस ने एक जगह

कहा था, कि व्यवस्था के बिना भी लोग "स्वभाव ही से" व्यवस्था का अनुसरण करते थे। (रोमियों 2:14)। सो क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर है (भजन 19:1-6; रोमियों 1:19-20), और क्योंकि हम सही और गलत की पहचान रखते हैं, इसलिये हमें अपने विचारों और कामों और जीवनों का लेखा परमेश्वर को देना होगा। (प्रेरितों 10:42; रोमियों 2:16; 1 कुरि. 4.5)।

पर खेदपूर्ण सच्चाई यह है कि सब लोग जो समझदार हैं और अच्छाई और बुराई में अन्तर देखने के योग्य हैं, उन सबने पाप किया है। जो कुछ भी परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध है वही पाप है। अर्थात पाप "परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन" है। (1 यूहन्ना 3:4)। "सब प्रकार का अधर्म पाप है।" (1 यूहन्ना 5:17)। जो कुछ भी परमेश्वर की इच्छानुसार है वोह सही है, और जो कुछ भी उसकी इच्छा के विरूद्ध है वोह गलत है। परमेश्वर प्रेम है, इसलिये प्रेम न रखना पाप है। (1 यूहन्ना 4:8,16)। सच्चाई सही है, क्योंकि परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलता। (तीतुस 1:2)। नए नियम में बहुत सी बातों का उल्लेख मिलता है जिन्हें पाप कहा गया है। रोमियों की पुस्तक में पौलुस ने लिखकर कहा था:

> "सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए ; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए। और चुगलखोर, बदनाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार बुरी-बुरी बातों के बनानेवाले, माता-पिता की आज्ञा न माननेवाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दय हो गए।" (रोमियों 1:29-31)।

प्रेरित पौलुस ने भी "शरीर के कामों" का वर्णन करके एक जगह इस प्रकार कहा था: "शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और

इनके ऐसे-ऐसे और काम'' (गलतियों 5:19-21)। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएंगे, यदि वे अपना मन प्रत्येक पाप से फिराकर परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं चलेंगे। (1 कुरि. 6:9-10; कुलु. 3:5-10; 1 तिमु. 1:9-11; 2 तिमु. 3:2-5; याकूब 3:14-16; 1 पतरस 2:1-2)।

अपने पाप के लिये हम अन्य किसी को भी ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकते। प्रत्येक व्यक्ति परीक्षा में फंसकर स्वयं पाप करता है (याकूब 1:12-15)। यद्यपि आदम और हव्वा के द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया था, लेकिन उन्हें पाप करने के लिये किसी ने विवश नहीं किया था। हम सबने स्वयं अपनी ही इच्छा से पाप किया है। और इसी प्रकार पाप संसार भर में फैला है। (रोमियों 5:12)। जिस प्रकार मसीह का अनुसरण करने से लोगों का पाप से उद्धार होता है, उसी प्रकार जो लोग आदम के दिखाए मार्ग पर चलते हैं वे अपने ही पाप के कारण नाश होंगे। (रोमियों 5:15-21) कुछ लोग यह गलत शिक्षा देते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति इसलिये पापी है क्योंकि आदम ने पाप किया था, और इसलिये मनुष्य स्वभाव से ही पाप के साथ उत्पन्न होता है। किन्तु बाइबल इसके विपरीत सिखाती है। हर एक इनसान स्वयं व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के निकट ज़िम्मेदार है। बच्चे अपने माता-पिता या आदम के पाप के कारण दोषी नहीं ठहरेंगे। और ऐसे ही, माता-पिता भी अपनी संतान के अधर्म के लिये दोषी नहीं ठहराए जाएंगे। (यिर्मयाह 31:29-30; यहेजकेल 18:20)। हम में से प्रत्येक जन परमेश्वर के निकट स्वयं अपने ही कामों के लिये ज़िम्मेदार है।

क्योंकि हम पाप में हैं और परमेश्वर पवित्र तथा पाप-रहित है, इसलिये हम परमेश्वर से अलग हैं। (यशायाह 59:1-2)। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उनके पाप के कारण अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया था (उत्पत्ति 3:1-24)। ऐसे ही परमेश्वर

हमें भी हमारे ही पाप के लिये दोषी मानता है। सबके सब पाप के वश में हैं (रोमियों 3:9) "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं" (रोमियों 3:10)। "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों 3:23; 1 यूहन्ना 1:8-10)। "पाप की मजदूरी मृत्यु है।" (रोमियों 6:23; गल. 6:7,8)। हम सब क्योंकि पाप के वश में हैं, इसलिये, हम सबको पाप से मुक्ति की आवश्यकता है। हम स्वयं अपने आपको पाप से मुक्त नहीं कर सकते। (रोमियों 5:6)। हमें परमेश्वर की आवश्यकता है। हमें एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है।

स्वर्ग से आया मुक्तिदाता

एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जो एक बड़े ही गहरे गड्ढ़े में गिरा पड़ा है। वोह स्वयं बाहर नहीं आ सकता। उसे किसी की आवश्यकता है, जो उसकी सहायता करके उसे ऊपर खींच ले। उसे आवश्यकता है कि कोई उसके पास एक रस्सी या सीढ़ी को लटकाए। उसे एक बचानेवाले की ज़रूरत है। ऐसे ही, इनसान पाप के गड्ढे में है। उसे ऊपर से अर्थात स्वर्ग से सहायता की आवश्यकता है। हमारे महान परमेश्वर ने हमें एक मुक्तिदाता को दिया है। परमेश्वर केवल एक ही है (व्यवस्था. 6:4; मरकुस 12:29,32; 1 कुरि. 8:4,6; इफि. 6:6; याकूब 2:19)। बाइबल में उस एक परमेश्वर को पिता, और पुत्र और पवित्रात्मा के रूप में दर्शाया गया है। (मत्ती 28:19; 2 कुरि. 13:14; यूहन्ना 15:26)। परमेश्वर को "पिता" कहकर बुलाने का तात्पर्य इस बात से है कि वोह हमारी चिन्ता करता है और हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। (मत्ती 6:9; 7:9-11)। यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, इसका तात्पर्य इस बात से है, कि जैसे कि एक पुत्र अपने पिता की आज्ञा को मानता है, उसी तरह से यीशु मसीह ने भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके अपने आपको सारी मानवता के पापों के लिये बलिदान कर दिया था। (यूहन्ना 4:34; 5:30; 6:38) पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं। वे तीनों एक ही हैं। एक ही परमेश्वर है।

इसका अर्थ यह है, कि मुक्तिदाता यीशु का अस्तित्व पृथ्वी पर उसके जन्म लेने से ही आरम्भ नहीं हुआ था, पर वोह आरम्भ

से ही विद्यमान था। (यूहन्ना 8:58)। वोह जगत की उत्पत्ति से पहले भी विद्यमान था। (यूहन्ना 1:3; कुलु. 1:15,16, इब्रानियों 1:2)। वोह सदा से ही विद्यमान है। (यूहन्ना 3:13; 8:23; 17:5,24; 18:37)। वोह था, और वोह है, और वोह हमेशा रहेगा। (प्रकाशित 1:8; 17; 21:6; 22:13; यूहन्ना 1:1; इब्रा. 13:8) यद्यपि कि वोह सदा से ही स्वर्ग में था, तौभी वोह पृथ्वी पर आ गया था, ताकि मनुष्य को उसके द्वारा पाप से मुक्ति मिल जाए। (2 कुरि. 8:9)। प्रभु यीशु मसीह के मुक्ति के सुसमाचार का वर्णन पौलुस ने इन शब्दों में किया था:

जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। (फिलिप्पियों 2:6-7)।

मनुष्य को पाप से मुक्ति पाने की आवश्यकता थी। और यह जानते हुए कि मनुष्य स्वयं अपने आप को पाप से मुक्त नहीं करा सकता, परमेश्वर ने यीशु मसीह को अपने पुत्र के रूप में, मानवता का पाप से उद्धार करने के लिये संसार में भेज दिया था। (यूहन्ना 3:16)। इसी को बाइबल में "सुसमाचार" कहा गया है। (मरकुस 1:1; 16:15; रोमियों 1:16; इफि. 1:13; 1 तीमु. 1:11)। अर्थात् यह अच्छा समाचार है। क्योंकि अब हमारे पास पाप से छुटकारा पाने का उपाय है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को स्वर्ग से पृथ्वी पर इसलिये भेजा है ताकि हम उसके द्वारा उद्धार पाएँ।

मसीह का जन्म

परमेश्वर ने अपने पुत्र को एक बड़े ही आश्चर्यजनक रूप में पृथ्वी पर भेजा था। एक यहूदी पुरूष और एक यहूदी स्त्री को परमेश्वर ने नियुक्त किया था, अपने पुत्र के माता-पिता बनने के लिये। यूसुफ़ और मरियम की मंगनी हो चुकी थी, पर उनकी शादी तब नहीं हुई थी। (मत्ती 1:18-25) मरियम कुंवारी थी (लूका 1:26-34)। परमेश्वर के पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से यीशु मरियम के पेट में आ गया था (मत्ती 1:20; लूका 1:35)। इस प्रकार यीशु को पृथ्वी पर एक मां मिल गई थी, परन्तु उसका पिता परमेश्वर स्वयं था। (गल. 4:4; रोमियों 1:3; लूका 1:35)। यीशु मसीह परमेश्वर की सामर्थ से एक कुंवारी के द्वारा उत्पन्न हुआ था।

परमेश्वर का पुत्र पृथ्वी पर एक मनुष्य बनकर आया था। वोह वास्तव में 'अवतार' था। यीशु के पृथ्वी पर जन्म लेकर आने से पहले, की बात का वर्णन करके प्रेरित यूहन्ना ने लिखकर कहा था कि वोह 'वचन' था, जो परमेश्वर के साथ था। "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था.. .और वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में रहा।" (यूहन्ना 1:1,14; रोमियों 8:3; 1 तीमु. 3:16; 1 यूहन्ना 4:2; 2 यूहन्ना 7)। हमारा उद्धारकर्ता बनने के लिये, मसीह हमारे समान बन गया था। (इब्रानियों 2:14,17)।

यीशु मसीह का व्यक्तित्व कई तरह से निराला था। वोह परमेश्वर था, परन्तु मनुष्य बन गया था। इस पृथ्वी पर वोह मनुष्य के ही

रूप में था। (मत्ती 1:1-17; रोमियों 1:3; 9:5)। पहले वोह सामान्य रूप से एक नन्हा बालक था, और फिर धीरे-धीरे वोह एक पुरुष बना था (लूका 2:40)। हमारी ही तरह उसे भूख और प्यास लगती थी, और उसे आराम करने की भी आवश्यकता थी; और वोह प्रार्थना भी करता था। (मत्ती 4:2; 8:24; 14:23; यूहन्ना 4:5-7; 19:28)। एक मनुष्य की ही तरह यीशु को आनन्द, दुख, क्रोध, प्रेम, और दया का अनुभव होता था। (मत्ती 9:36; 26:37; मरकुस 3:5; 10:21; लूका 10:21; यूहन्ना 12:27; 15:11)। यीशु रोया भी था। (यूहन्ना 11:35)। वोह परखा भी गया था (मत्ती 4:1-11; लूका 4:1-13; इब्रा. 4:15)। शारीरिक दुख-दर्द और मृत्यु का अनुभव भी उसे हुआ था। (1पतरस 3:18; 4:1)। यीशु पृथ्वी पर एक इनसान के रूप में ही था।

किन्तु, यीशु क्योंकि स्वर्ग से आया था इसलिये वोह ईश्वरीय भी था। (यूहन्ना 10:30)। बाइबल में उसे न केवल "प्रभु" और "परमेश्वर का पुत्र" ही कहकर सम्बोधित किया गया है (यूहन्ना 10:25-33; लूका 2:11; प्रकाशित. 4:8-11; 19-16), परन्तु उसे "परमेश्वर" भी कहा गया है। (यूहन्ना 1:1; 20:28; रोमियों 9:5; तीतुस 2:13; इब्रा. 1:8; 2 पतरस 1:1)। उसे अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप भी कहा गया है। (कुलु. 1:15,19; 2:9)। यीशु पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में परमेश्वर था।

यीशु क्योंकि परमेश्वर भी था और मनुष्य भी था, इसलिये वोह वास्तव में मनुष्य का मुक्तिदाता था। वोह परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक बिचवई बनकर आया था। (1 तीमु. 2:5-6)। एक मनुष्य के रूप में वोह सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित कर सकता था। और परमेश्वर के रूप में वोह एक सिद्ध बलिदान देने के योग्य था। वोह एक ऐसा बलिदान था जिसे परमेश्वर ने आरम्भ से ही नियुक्त किया था। (1 पतरस 1:20)। वोह परमेश्वर एक मनुष्य बनकर स्वर्ग से पृथ्वी पर जगत के सब लोगों का पाप

से उद्धार करने को आया था। इसलिये जब उसका जन्म हुआ था, तो स्वर्गदूतों ने गड़रियों के एक झुंड को यह संदेश दिया था, "कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।" (लूका 2:11)।

मसीह का जीवन

बाइबल के नए नियम की पहली चार पुस्तकों के नाम हैं मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना। इन चारों पुस्तकों में हम प्रभु यीशु के जन्म के बारे में (मत्ती 1:1-2:12; लूका 1:26-2:20), और उससे सम्बन्धित उस घटना के बारे में भी पढ़ते जब वोह बारह वर्ष का था (लूका 2:41-52)। परन्तु विशेष रूप से इन पुस्तकों में यीशु के जीवन के अंतिम तीन वर्षों की घटनाओं का वर्णन हमें मिलता है। उन तीन वर्षों में जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करना आरम्भ किया था, और बहुतेरे लोग उसके प्रचार को सुनकर उसके पास आए थे, तो उन्हीं में से यीशु ने अपने लिये बारह चेलों को चुना था। उन चेलों को यीशु ने इसलिये चुना था ताकि उसके स्वर्ग पर वापस चले जाने के बाद वे उसके सुसमाचार का प्रचार सब लोगों में करेंगे। वे चेले उसके "प्रेरित" कहलाए थे।

यीशु ने पृथ्वी पर अनेकों आश्चर्यकर्मों को किया था, जो इस बात के गवाह थे कि वोह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। (यूहन्ना 2:11; 5:36; 10:25; 37-38; 14:11; लूका 7:20-22; मत्ती 9:1-8; इब्रानियों 2:4)। जिन आश्चर्यपूर्ण कामों को यीशु ने किया था उनमें से कुछ का वर्णन हमें बाइबल में मिलता है। और लिखा है, कि "ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करके उसके द्वारा जीवन पाओ।" (यूहन्ना 20:30,31)। प्रभु यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यपूर्ण सामर्थ्य के कामों का वर्णन नए नियम की पहली चार पुस्तकों में हमें इस प्रकार मिलता है:

1. जल को दाखरस में बदलना (यूहन्ना 2:1-11)।
2. राजा के कर्मचारी के पुत्र को चंगा करना (यूहन्ना 4:46-54)।
3. मंदिर में एक व्यक्ति को चंगाई देना (मरकुस 1:23-26; लूका 4:33-35)।
4. पतरस की सास को चंगा करना (मत्ती 8:14-15; मरकुस 1:30-31; लूका 4:38-39)।
5. बहुत बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ना (लूका 5:1-11)।
6. एक कोढ़ी को चंगाई देना (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-42; लूका 5:12-13)।
7. लकवा मारे व्यक्ति को चंगा करना (मत्ती 9:2-7, मरकुस 2:3-12; लूका 5:18-25)
8. एक मनुष्य को बेतहसदा के कुण्ड के पास चंगाई देना (यूहन्ना 5:1-9)।
9. एक सूखे हुए हाथवाले व्यक्ति को चंगा करना (मत्ती 12:10-13; मरकुस 3:1-5; लूका 6:6-10)।
10. एक सूबेदार के सेवक को चंगाई देना (मत्ती 8:5-13; लूका 7:1-10)।
11. एक विधवा के मरे हुए पुत्र को ज़िन्दा करना (लूका 7:11-15)।
12. दो अन्धों को चंगाई देना (मत्ती 9:27-31),
13. तूफ़ान को शांत करना (मत्ती 8:23-27; मरकुस 4:37-41; लूका 8:22-25)।
14. दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य को चंगा करना (मत्ती 8:28-34; मरकुस 5:1-15; लूका 8:27-35)।
15. एक स्त्री को लहू बहने की बीमारी से चंगाई देना (मत्ती 9:20-22; मरकुस 5:25-29; लूका 8:43-48)।
16. याईर की बेटी को जिलाना (मत्ती 9:18-19,23-25; मरकुस 5:22-24,38-42; लूका 8:41-42,49-56)।

17. एक गूंगे को चंगा करना (मत्ती 9:32,33)।
18. 5000 लोगों को भोजन खिलाना। (मत्ती 14:15-21; मरकुस 6:35-44; लूका 9:12-17; यूहन्ना 6:5-13)।
19. पानी के ऊपर चलना (मत्ती 14:25; मरकुस 6:48-51; यूहन्ना 6:19-21)।
20. कनानी स्त्री की बेटी को चंगा करना (मत्ती 15:21-38; मरकुस 7:24-30)।
21. एक गूंगे-बहरे को चंगाई देना (मरकुस. 7:31-37)।
22. आश्चर्यक्रम द्वारा 4000 लोगों को भोजन खिलाना (मत्ती 15:32-38; मरकुस 8:1-9)
23. एक अंधे को चंगाई देना (मरकुस 8:22-26)।
24. दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़के को चंगा करना (मत्ती 17:14-18; मरकुस 9:17-19; लूका 9:38-43)।
25. मछली के मुंह में से सिक्का निकालना (मत्ती 17:24-27)।
26. एक जन्म के अंधे को चंगा करना (यूहन्ना 9:1-41)
27. एक बहरे और अंधे को चंगा करना (मत्ती 12:22; लूका 11:14)।
28. एक अपाहिज स्त्री को चंगाई देना (लूका 13:11-13)
29. जलन्धर के रोगी को चंगा करना (लूका 14:1-4)।
30. लाज़र को ज़िन्दा करना (यूहन्ना 11:1-44)
31. दस कोढ़ियों को चंगाई देना (लूका 17:11-19)
32. दो अंधों को चंगाई देना (मत्ती 20: 29-34; (मरकुस 10:46-52; लूका 18:35-43)।
33. अंजीर के पेड़ को सुखा देना (मत्ती 21:18-22; मरकुंस 11:12-14; 20-25)।
34. मालकस का कान चंगा करना (लूका 22:50-51)
35. आश्चर्यजनक रूप से मछलियां पकड़ना (यूहन्ना 21:1-11)

सुसमाचार की पुस्तकों में यीशु के बपतिस्मे का भी वर्णन मिलता है। (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-22)। यीशु ने इसलिये बपतिस्मा नहीं लिया था कि उसे पापों की क्षमा की आवश्यकता थी। पर उसने परमेश्वर की इच्छा को मानने के लिये बपतिस्मा लिया था। वोह हमारे लिये आदर्श बनना चाहता था। उसके बपतिस्मा लेने के समय परमेश्वर ने यह कहा था, कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं प्रसन्न हूं।" (मत्ती 3:17) ऐसे ही, सुसमाचार की पुस्तकों में हम यीशु की परीक्षा में पड़ने के बारे में भी पढ़ते हैं। (मत्ती 4:1-11; लूका 4:1-13)। यीशु के जीवन में एक बड़ी ही महत्वपूर्ण घटना तब घटी थी जब उसका रूपान्तर हुआ था (मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-10; लूका 9:28-36; 2 पतरस 1:16-18)। इस घटना में, पतरस, याकूब और यूहन्ना नाम के यीशु के चेलों के सामने उसका रूप बदल गया था। उस समय भी आकाश से परमेश्वर की यह आवाज़ आई थी कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो" (मरकुस 9:7) यीशु ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में यरूशलम में प्रवेश किया था (मत्ती 21:1-11; लूका 19:28-40 यूहन्ना 12:12-19), वहां उसने परमेश्वर के मन्दिर को शुद्ध किया था (मत्ती 21:12-17; मरकुस 11:15-19; लूका 19:45-48)। फिर हम पढ़ते हैं कि वोह कैसे पकड़वाया गया था, उस पर दोष लगाए गए थे, उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, और मरने के बाद वोह फिर से जी उठा था (मत्ती 26: 36-28:10; मरकुस 14:32-16:18; लूका 22:39-24:49; यूहन्ना 18:1-21:14)।

मसीह की शिक्षाएँ

मसीही लोग यीशु, को एक महान शिक्षक के रूप में भी मानते हैं। कदाचित यीशु कभी स्कूल नहीं गया था (यूहन्ना 7:15)। तौभी उसकी शिक्षाओं को सुनकर लोग दंग रह जाते थे (यूहन्ना 7:46)। यीशु अकसर दृष्टान्तों के द्वारा शिक्षा देता था। उन दृष्टान्तों में वोह बड़ी ही साधारण वस्तुओं के बारे में बताता था। और अन्य लोगों से हटकर, वोह न केवल सिखाता था पर वोह उन बातों पर स्वयं अमल भी करता था। (मत्ती 23:3)। वोह शिक्षा अधिकार से देता था (यूहन्ना 3:34; 7:16; मत्ती 7:28-29)। उसे किसी और मनुष्य के अधिकार का हवाला नहीं देना पड़ता था। वोह कहता था, "मैं तुम से कहता हूं" (मत्ती 5:22,28,32,34,34,44)। न केवल उसने सच्चाई सिखाई, पर वोह स्वयं ही सच्चाई था (यूहन्ना 14:6)। यीशु ने जिस मार्ग पर चलने की शिक्षा दी थी, वही प्रसन्नता का मार्ग है। (यूहन्ना 10:10; मत्ती 5:3-12)। आज अनेक मनोचिकित्सकों का मानना है कि खुश रहने के लिये जिन बातों को वे आज लोगों को कहते हैं वे वही हैं जिनकी शिक्षा यीशु देता था।

यीशु के कुछ दृष्टान्त बड़े ही रोचक और आत्मिक गहराई से परिपूर्ण हैं। जैसे कि लूका 15 अध्याय में, खोई भेड़, खोए सिक्के, और खोए पुत्र के दृष्टान्त हैं। इन तीनों दृष्टान्तों से हमें यह शिक्षा मिलती हैं कि परमेश्वर चाहता है कि हम सब उसके पास लौटकर आ जाएँ और वोह हमें स्वीकार करेगा। यूहन्ना 10 अध्याय में से हम अच्छे चरवाहे के दृष्टान्त को भी पढ़ सकत हैं। मत्ती ने अपनी पुस्तक में यीशु की कुछ प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन किया है।

निम्नलिखित तीनों स्थानों में से पढ़िए, ताकि आप यह जानें कि क्यों यीशु को एक महान शिक्षक माना जाता है।

1. पहाड़ी उपदेश (मत्ती 5:1-7:28)।
2. राज्य के दृष्टान्त (मत्ती 13:1-53)
3. राज्य में जीवन (मत्ती 18:1-35)।

नैतिकता तथा उत्तम जीवन के सम्बन्ध में जो शिक्षाएँ यीशु ने दी थीं वे सबसे अलग हैं। यीशु की शिक्षा में केवल ऊपरी दिखावा मात्र नहीं था। उसकी शिक्षाएं मन को छू जाती थीं (मत्ती 23:1-28)। हत्या करना पाप है। पर यीशु ने सिखाया था। कि मनुष्य को सबसे पहले ईर्ष्या और क्रोध जैसी चीज़ों को अपने मन से निकाल देना चाहिए, क्योंकि पाप की जड़ वहीं है (मत्ती 5:21-26)। व्यभिचार पाप है। पर यीशु ने कहा था, कि सबसे पहले हमें अपने मन से लालच और बुरी अभिलाषा को निकाल देना चाहिए। (मत्ती 5:27-30)। यीशु ने न केवल अच्छे कामों को करने की शिक्षा ही दी थी, पर यह भी सिखाया था कि हमारे उद्देश्य और दृष्टिकोण भी सही होने चाहिए (मत्ती 6:1-6, 16-18)। यदि स्वार्थ के साथ कोई भला काम किया जाए तो उसकी अच्छाई खो जाती है। यीशु की अधिकांश शिक्षाएं "परमेश्वर के राज्य" के बारे में थीं (मरकुस 1:14-15; मत्ती 13:1-53)। "परमेश्वर के राज्य" का अभिप्राय परमेश्वर के अधिकार से है। जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की बात कही थी, तो उसका अभिप्राय स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने से था। (मत्ती 25:34)। परमेश्वर के राज्य के बारे में बार-बार सिखाने से यीशु का अभिप्राय यह था कि लोग परमेश्वर को एक राजा की तरह स्वीकार करें और उसकी हर एक बात को मानें। (मत्ती 6:10)। यीशु ने यह भी सिखाया था कि लोग बुराई से अपना मन फिराएं और नम्रता के साथ रहें, तथा अन्य लोगों की सेवा करें (मरकुस 1:15; 9:35; 10:15; लूका 22:25-27)।

यीशु ने अपनी शिक्षाओं में सबसे अधिक बल प्रेम के ऊपर

दिया था। जिस 'प्रेम' का वर्णन यीशु ने किया था उससे उसका तात्पर्य इस बात से नहीं था कि "किसी के प्रति अच्छा सोचा जाए" या "किसी से सहानुभूति रखी जाए"। पर यीशु का अभिप्राय ऐसे प्रेम से था कि निःस्वार्थ भावना से अन्य लोगों की भलाई को सबसे ऊपर रखा जाए। उसने सिखाया था कि हमें अपने शत्रुओं से भी प्रेम रखना चाहिए (मत्ती 5:43-48)। जो हमारे साथ अच्छा व्यवहार रखते हैं उनके साथ अच्छा व्यवहार रखा जा सकता है, पर क्या हम उस व्यक्ति के साथ भी अच्छा व्यवहार रखेंगे, जो हमारी बुराई करता और चाहता है? यीशु ने अपने चेलों को सिखाया था कि वे "आपस में प्रेम रखें" (यूहन्ना 13:34; यूहन्ना 15:10; 1 यूहन्ना 5:3; 2 यूहन्ना 6)। यीशु ने सिखाया था कि प्रेम रखना मनुष्य का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा यही है।" यीशु ने कहा था, "और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" (मत्ती 22:37-39; मरकुस 12:29-30; लूका 10:27; व्यवस्था 6:5)। और यीशु ने यह कहकर हमें यह "सुनहरा नियम" भी दिया था कि "जैसा तुम चाहते हो कि अन्य लोग तुम्हारे साथ करें, वैसा ही तुम उनके साथ भी करो।" (मत्ती 7:12; लूका 6:31)। निःसंदेह, यीशु के पास "जीवन के वचन" हैं। (यूहन्ना 6:68)।

यीशु मसीह की पवित्रता

यीशु के "सिद्ध बनने" के बारे में बाइबल बताती है (इब्रानियों 5:9)। "उसमें कोई पाप नहीं है" (1 यूहन्ना 3:5)। क्योंकि वोह हमारे पापों के लिये एक मेमने की तरह बलिदान हुआ था, इसलिये उसका पापरहित होना आवश्यक था। (यूहन्ना 1:29; इब्रानियों 9:14)। प्रेरित पतरस ने कहा था कि "उसने कभी कोई पाप नहीं किया था" (1 पतरस 2:22)। पौलुस प्रेरित के अनुसार, "परमेश्वर ने उसे हम सबके पापों के बदले में पाप बनाया था (2 कुरि. 5:21)। यीशु, "हमारी ही तरह सब प्रकार से परखा तो गया था, तौभी उसने कोई पाप नहीं किया था।" (इब्रानियों 4:15) यीशु ने अपने विरोधियों से भी पूछा था, कि "किस पाप के लिये तुम मुझे दोषी ठहरा सकते हो?" (यूहन्ना 8:46)। यीशु मसीह वास्तव में "पवित्र और धर्मी है।" (प्रेरितों. 3:14)। यीशु ने क्योंकि कभी भी कोई पाप नहीं किया था इसलिये वोह पाप-रहित था। और उसने पाप इसलिये नहीं किया था क्योंकि वोह पवित्र और धर्मी था। (प्रेरितों. 10:38)।

यीशु के पाप-रहित या दोष-मुक्त होने के प्रमाण अनेक हैं। न केवल उसके मित्रों ने ही उसे निष्पाप माना था, पर जो उसके मित्र नहीं भी थे उन्होंने भी उसे दोष-मुक्त माना था। और सबसे आश्चर्यपूर्ण बात यह है कि जो लोग यीशु के प्रशंसक भी नहीं थे, वे भी उसे दोष-रहित मानते थे। बाइबल के निम्नलिखित हवाले इस बात पर प्रकाश डालते हैं:

1. सहानुभूति रखनेवाले साक्षी

क. पतरस-लूका 5:8; 1 पतरस 1:19; 2:22; 3:18; यूहन्ना 6:69; प्रेरितों. 3:14

ख. पौलुस-2 कुरिन्थियों 5:21

ग. इब्रानियों की पुस्तक का लेखक - इब्रा. 2:10; 4:15; 5:8,9; 7:26-28; 9:14

घ. स्तिफनुस-प्रेरितों 7:52

च. हनन्नयाह-प्रेरितों 22:14

छ. आरम्भ के मसीही लोग-प्रेरितों. 4:30

ज. जिब्राइल स्वर्गदूत-लूका 1:35

2. सहानुभूति न रखनेवाले साक्षी

क. यहूदियों के अगुए-मत्ती 26:55-59; मरकुस 14:48-56; लूका 22:52-53; यूहन्ना 18:20-21

ख. यहूदा-मत्ती 27:4

ग. दुष्टात्माएं-मरकुस 1:24; लूका 4:34

3. सामान्य साक्षी

क. पिलातुस-मत्ती 27:18; 23-24; मरकुस 15:14; लूका 23:4, 14-15,22, यूहन्ना 18:38; 19:4-6

ख. पिलातुस की पत्नी- मत्ती 27:19

ग. क्रूस पर चढ़ाया गया डाकू-लूका 23:41

घ. यहूदियों का सरदार-लूका 23:37

4. स्वयं यीशु की साक्षी

क. यूहन्ना 8:46; 14:30; 15:25; 18:23

ख. उसका आज्ञा-पालन-यूहन्ना 4:, 34; 5:30; 6:38;7:18; 8:29, 55; 15:10; 17:4; लूका 22:42; इब्रानियों 10:5-7

इन सभी साक्षियों में स्वयं यीशु की ही साक्षी सबसे प्रमुख मानी जानी चाहिए। क्योंकि जो व्यक्ति जितना अच्छा होगा उतना ही वोह अपनी छोटी सी छोटी गलती पर भी ध्यान देगा। पर जो व्यक्ति बुरा होगा वोह अपनी बड़ी सी बड़ी बुराई को भी छोटी बात समझेगा। यीशु के व्यक्तित्व में झांककर देखने से पता चलता है कि वोह स्वयं जानता था कि उसमें कोई बुराई नहीं है। अपने आप को पाप-रहित बताकर या तो उसने स्वयं को बड़ा अभिमानी प्रमाणित किया था, या उसने वास्तव में सच कहा था। यीशु या तो एक सिरफिरा और झूठा व्यक्ति था, या वोह सचमुच में प्रभु था। सभी अन्य प्रमाण भी यीशु को दोषमुक्त ठहराते हैं। इसीलिये, उसके सभी अनुयायी उसे निष्पाप और पाप-रहित मानते हैं। यीशु का पाप-रहित होना इस कारण से अति आवश्यक था, क्योंकि उसे परमेश्वर ने सारे जगत के पापों का, उसके बलिदान के द्वारा, प्रायश्चित ठहराया था।

प्रायश्चित

यीशु को, क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा, संसार के सब लोगों के पापों का 'प्रायश्चित' ठहराया गया था। यदि आपने क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु के कष्टों और उसकी मृत्यु के बारे में कभी भी सुना या पढ़ा नहीं है तो आप बाइबल में इस बारे में पढ़ सकते हैं। (मत्ती 27:27-52; मरकुस 15:16-39; लूका 23:46-48; यूहन्ना 19:16-37)। पुराने नियम में पशुओं के जिन बलिदानों के विषय में हम पढ़ते हैं, उनके द्वारा परमेश्वर लोगों को पहले ही से प्रायश्चित के महत्व को समझा रहा था। (रोमियों 15:4; 1 कुरिन्थियों 10:6)। जैसे कि पुराने नियम में हम पढ़ते हैं, कि जब मिस्र के लोगों की हठधर्मी के कारण उनके पहिलौठे पुत्र मर रहे थे, तो परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा देकर कहा था के वे अपने-अपने घरों में एक निर्दोष मेमने को बलिदान करें। और मेमने के लहू को उन्हें अपने घरों के दरवाज़ों की चौखटों पर लगाना था। और जिन घरों के द्वारों पर लहू लगा हुआ था, उनमें मृत्यु ने प्रवेश नहीं किया था। इसके द्वारा परमेश्वर ने लोगों को भविष्य में होनेवाले यीशु के प्रायश्चित-रूपी बलिदान के विषय में सिखाया था। यीशु के बहाए लहू के द्वारा आज हम अनन्त मृत्यु से बच सकते हैं।

ऐसे ही पुराने नियम में हम यहूदियों के प्रायश्चित के दिन के बारे में भी देखते हैं। उनसे कहा गया था कि वे दो बकरे लें। उनमें से एक को बलिदान किया जाए और उसके लहू को यहूदियों के मन्दिर में छिड़का जाए। फिर उनका महायाजक दूसरे बकरे पर अपने हाथ रखे। और इस प्रकार से सभी लोगों के पापों के लिये उस निर्दोष बकरे को पापी घोषित करे। फिर उस बकरे को दूर

जंगल में छोड़ दिया जाए। ऐसा करके लोगों को यह समझाया जाता था कि उनके पाप उनसे दूर हो गए हैं। बलिदान और लहू बहाए जाने के द्वारा पापों से मुक्ति हो जाती थी। ऐसा उन्हें सिखाया जाता था। "सच तो यह है कि व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ लहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं, और बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं।" (इब्रानियों 9:22)। यीशु मसीह, ऐसे ही अपने बलिदान के द्वारा आज हमारे पापों का प्रायश्चित है। जैसे कि लिखा है: "वोह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे कि हम पापों के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।" (1 पतरस 2:24)।

पुराने नियम के काल में हुए पशु-बलिदान मनुष्य के पापों का स्थायी समाधान नहीं था। किन्तु वे सभी बलिदान उस एक आनेवाले बलिदान की ओर संकेत दे रहे थे, जिसे परमेश्वर तैयार कर रहा था। (गलतियों 3:23-25; 4:4) उन बलिदानों के द्वारा परमेश्वर लोगों को सिखा रहा था कि वे उसकी आज्ञा मानें और उस पर भरोसा रखें। वे सभी बलिदान उदाहरण के रूप में थे। इब्रानियों की पत्री का लेखक कहता है, कि "यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे।" (इब्रानियों 10:4)। पर क्रूस पर हुआ यीशु का बलिदान और उसका बहाया लहू हमारे पापों का स्थायी और उचित समाधान है। यूहन्ना ने यीशु को देखकर, इसलिये सही कहा था, कि, "यह परमेश्वर का मेमना है जो जगत के पापों को उठा ले जाता है।" (यूहन्ना 1:29)। यीशु ने सारे जगत के पापों के बदले में स्वयं अपने आप को ही बलिदान कर दिया था। जैसे कि लिखा है, कि, "अब युग के अन्त में वोह एक ही बार प्रकट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।" (इब्रानियों 9:26)।

प्रायश्चित के विषय में ही पुराने नियम में से यशायाह 52:13-53:12 को पढ़कर भी समझा जा सकता है। नए नियम में

भी इसका हवाला हमें मिलता है (प्रेरितों. 8:32-35)। यशायाह 53 अध्याय में परमेश्वर के धर्मी दास का तात्पर्य यीशु से ही है। (यशायाह 53:7,9)। जैसे उसके सताए जाने के बारे में लिखा है, वैसे ही यीशु को भी सताया गया था। (यशायाह 53:5,8,12)। उसके दुख अचानक नहीं थे, पर वे परमेश्वर की ठहराई पूर्व योजना के अनुसार थे। (यशायाह 53:6,10; प्रेरितों. 2:23; 1 पतरस 1:20)। उसने उन सब दुखों को एक ख़ास कारण से सहा था। (यशायाह 53:4-6, 12; 2 कुरिन्थियों 5:21)। और फिर वोह अंत में सभी दुखों को उठाने के बाद विजयी हुआ था। (यशायाह 53:11-12; रोमियों 8:37; 1 कुरिन्थियों 15: 54-57)। मसीह की मृत्यु में हमें पाप पर और मृत्यु और शैतान पर विजय मिलती है। (इब्रानियों 2:14; कुलुस्सियों 2:14,15)।

यीशु ने स्वयं अपनी मृत्यु की घोषणा इन शब्दों में की थी: "यह वाचा का मेरा वोह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।" (मत्ती 26:28)। यीशु की मृत्यु का वर्णन करके पौलुस ने कहा था कि "लहू बहाने के कारण वोह एक प्रायश्चित ठहरा है।" (रोमियों 3:25)। मसीही लोगों को लिखकर पतरस ने कहा था कि पाप से तुम्हारा छुटकारा "निर्दोष और निष्कलंक मेमने, अर्थात मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ है।" (1 पतरस 1:19)। यीशु ने अपना लहू बहाकर "हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है।" (प्रकाशित. 5:9; इफिसियों 1:7; 5:25; मरकुस 10:45; प्रेरितों 20:28; 1 कुरिन्थियों 6:19, 20; 1 यूहन्ना 1:7)।

यीशु की मृत्यु जगत के सब लोगों के लिये थी। जो लोग ऐसा समझते हैं कि यीशु केवल कुछ चुने हुए लोगों के लिये ही क्रूस पर मरा था, उनकी सोच गलत है। क्योंकि बाइबल में लिखा है कि यीशु की मृत्यु सारे जगत के सब लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिये थी। (यूहन्ना 1:29; 3:16-17; 4:42; 2 कुरिन्थियों 5:19;

1 यूहन्ना 2:2; 4:14)। वोह "सबके" लिये मारा गया था। (2 कुरिन्थियों 5:14; 1 तिमुथियुस 2:6; इब्रानियों 2:9; तितुस 2:11)। सब पापियों के लिये (1 तिमुथियुस 1:15; रोमियों 5:6-8)। और उनके लिये भी जो बचकर खो गए हैं (2 पतरस 2:1)। क्योंकि परमेश्वर सब को बचाना चाहता है (2 पतरस 3:9; 1 तिमुथियुस 2:4)। पर यद्यपि यीशु ने सबके लिये अपनी जान दी थी, तौभी केवल इसीलिये सब नहीं बचेंगे। प्रायश्चित सबके पापों के लिये हुआ था, पर उद्धार उन्हीं का होगा जो विश्वास करेंगे। (1 तिमुथियुस 4:10)

यीशु ने परमेश्वर की इच्छा और आज्ञा को मानकर हम सबके पापों का प्रायश्चित करने को स्वयं अपने आप को हमारे स्थान पर मरने को दे दिया था। यीशु पाप-रहित था। उसमें कोई दोष या पाप नहीं था। उसे मरने की आवश्यकता नहीं थी। उसने स्वयं अपनी ही इच्छा से हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया था, और हमारे स्थान पर हमारे पापों के दण्ड को भी अपने ऊपर ले लिया था। उसने पाप की उस दीवार को ढहा दिया था जो परमेश्वर और इनसान के बीच में थी। (यशायाह 59:1,2)। जैसे कि प्रेरित पतरस ने कहा था : "इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात अधर्मियों के लिये धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए" (1 पतरस 3:18)। प्रायश्चित का अर्थ बताने के तात्पर्य से पौलुस ने यह कहा था:

क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु हो सकता है किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी साहस करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। अतः जबकि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर

उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे? (रोमियों 5:6-10)।

इसी कारण से केवल यीशु मसीह ही सब मनुष्यों के लिये उद्धार पाने की आशा है। "किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके" (प्रेरितों 4:12)। कोई भी बिना उसके पिता के पास नहीं आ सकता (यूहन्ना 14:6)।

पाप की मजदूरी तो मृत्यु है (रोमियों 6:23), किन्तु परमेश्वर ने किसी निष्पाप मनुष्य का बलिदान नहीं माँगा। परमेश्वर ने ऐसा नहीं कहा, कि "अपने पापों के एवज में किसी नवजात शिशु को बलिदान करो।" बल्कि, परमेश्वरत्व में का एक व्यक्तित्व स्वयं अपनी ही इच्छा से एक कुंवारी से जन्म लेकर मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आ गया था। वोह, परमेश्वर, एक पुत्र के रूप में, पृथ्वी पर एक सिद्ध और पाप-रहित मनुष्य बनकर रहा था। अर्थात, स्वयं परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए बलिदान दिया था। क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने अपना प्रेम सारी मानवता पर प्रकट किया था। (यूहन्ना 3:16; रोमियों 5:8; इफिसियों 5:25)। इसी कारण से मसीही लोग क्रूस पर मसीह की मृत्यु का प्रचार सभी जगह करते हैं (1 कुरिन्थियों 1:23; 2:2; 15:1-4; गलतियों 6:14)। हम परमेश्वर को उसके वरदान और बलिदान के लिए धन्यवाद देते हैं। परमेश्वर के प्रेम से प्रेरणा पाकर हम अपना जीवन उसकी इच्छा पर चलकर बिताना चाहते हैं। (मरकुस 8:34-37; 1 यूहन्ना 4:19; 2 कुरिन्थियों 5:14-15 यूहन्ना 12;32: 15:13; फ़िलिप्पियों 3:10; 1 पतरस 2:21; फिलिप्पियों 2:5-8; इब्रानियों 12:1-3)। हम जो मसीही हैं, हम अपनी किसी विशेषता पर घमण्ड नहीं करते। हमारा सब कुछ और हमारी महिमा केवल मसीह है जिसने अपने आप को हमारे लिये दे दिया था। (गलतियों 6:14; 2 कुरिन्थियों 4:5)।

मसीह का जी उठना

यीशु की मौत के बाद उसकी देह को एक कब्र में रख दिया गया था और उस कब्र के ऊपर एक बड़ा पत्थर रख दिया गया था। और उस कब्र पर पहरा बैठा दिया गया था। लेकिन तीसरे दिन यीशु जी उठकर उस कब्र से बाहर आ गया था। (मत्ती 28:1-15; मरकुस 16:1-18; लूका 24:1-49; यूहन्ना 20:1-29; गलतियों 1:1 इफिसियों 1:20)। यीशु का फिर से जन्म नहीं हुआ था, पर वही यीशु जो मारा और कब्र के भीतर गाड़ा गया था, फिर से ज़िन्दा हो गया था। मनुष्य केवल एक ही बार मरता है। बार-बार जन्म लेकर बार-बार नहीं मरता। (इब्रानियों 9:27)। हम सब भी केवल एक ही बार मरेंगे, और एक दिन हम सब जिलाए भी जाएंगे, ताकि हम सब परमेश्वर के न्याय का सामना करें। (यूहन्ना 5:29)

यीशु वास्तव में फिर से जी उठा था। वोह कब्र जिसमें उसे गाड़ा गया था, तीन दिन के बाद खाली पाई गई थी। (प्रेरितों 2:29; मत्ती 28:13)। बहुत से लोगों ने यीशु को जी उठने के बाद देखा था। (प्रेरितों 2:32; यूहन्ना 20:27-28; 1 कुरिन्थियों 15:4-7) यीशु के जी उठने के कारण ही अनेक लोगों के जीवनों में परिवर्तन आ गया था। उन्होंने अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी इस बात की गवाही देने के लिए कि यीशु सचमुच में जी उठा है। (यूहन्ना 7:5; प्रेरितों 1:14; 4:13-21; 5:42)। शाऊल जो यीशु का एक कट्टर विरोधी था, और बाद में पौलुस के नाम से जाना गया था, केवल इसीलिए मसीह का एक अच्छा अनुयायी बना था, क्योंकि जी उठने के बाद यीशु मसीह से उसका सामना हुआ था।

1 कुरिन्थियों 15:8-10; प्रेरितों 9:1-22; 22:1-16)।

हमें चाहिए कि हम जी उठे यीशु पर विश्वास लाएँ (यूहन्ना 20:27; रोमियों 10:9-10)। उसकी मृत्यु और गाड़े जाने और जी उठने में, बपतिस्मा लेकर, उसके साथ एक हो जाएँ। (रोमियों 6:1-6; कुलुस्सियों 2:12; 1 पतरस 3:21)। यीशु के जी उठने के कारण हमें उसमें यह विश्वास करना चाहिए कि वोह वास्तव में प्रभु है। (मत्ती 28:9; 17; रोमियों 1:4; यूहन्ना 20:28)। इस बात में हमें आनन्दित होना चाहिए, कि वोह जी उठा है, क्योंकि इससे हमें आशा मिली है। (मत्ती 28:8; यूहन्ना 20:20; रोमियों 6:9)। उसका जी उठना इस बात का प्रमाण है कि अंतिम दिन में हम सब भी उसी की तरह जिलाए जाएंगे। (रोमियों 8:29; 14:9; 1 कुरिन्थियों 15:20, 23, 51-54; इफिसियों 2:6; कुलुस्सियों 1:18; 2 तिमुथियुस 1:10; प्रकाशित. 1:5, 17-18)। यदि वोह जी नहीं उठता तो आज हमारे पास कोई आशा नहीं होती। (1 कुरिन्थियों 15:14-19)। परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा ही हमें मुक्ति पाने की आशा दी है। (रोमियों 4:25; 1 पतरस 3:21)। यदि हम "मसीह को और उसके जी उठने की सामर्थ्य को समझते हैं" तो हम भी "उसी के समान पुनरुत्थान प्राप्त करके" स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। (फिलिप्पियों 3:10; यूहन्ना 14:19; रोमियों 8:11; 1 कुरिन्थियों 6:14; 2 कुरिन्थियों 4:14; 1 थिस्सलुनीकियों 4:14; 1 पतरस 1:3)।

आरम्भ में कलीसिया न केवल क्रूस पर मसीह की मृत्यु का ही, परन्तु उसके जी उठने का भी प्रचार ज़ोर-शोर से करती थी। (प्रेरितों 2:24, 31; 4:2, 10; 5:30; 13:30-33, 37; 26:22-23)। वास्तव में कलीसिया के प्रचार का मूल उद्देश्य ही मसीह की मृत्यु और उसके जी उठने का प्रचार करना है। (लूका 24:48; प्रेरितों 1:8; 2:32; 3:15; 4:33; 5:32; 10:39-41; 13:47; (1 कुरिन्थियों 11:26)।

जी उठने के बाद यीशु मसीह स्वर्ग पर उठा लिया गया था (लूका 24:50-53; प्रेरितों 1:6-11)। मसीह को स्वर्ग पर उठा लिए जाने के द्वारा परमेश्वर ने मसीह को महिमान्वित भी किया था। (प्रेरितों 2:32-36; 7:56; कुलुस्सियों 3:1,2; इब्रानियों 1:3; 8:1)। क्रूस पर यीशु की मृत्यु का बयान करने के बाद, परमेश्वर द्वारा मसीह को इस प्रकार महिमान्वित करने के बारे में लिखकर पौलुस ने यूं कहा था।

इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वोह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता कि महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले, कि यीशु मसीह ही प्रभु है। (फिलिप्पियों 2:9-11)।

मसीह के सिद्ध जीवन और बलिदान रूपी उसकी मृत्यु के कारण, परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य से मसीह को जिलाकर उसे आकाश और पृथ्वी पर सारा अधिकार दिया था (मत्ती 28:18)। मसीह अपनी कलीसिया का सिर है (इफिसियों 1:20-23; कुलुस्सियों 1:16-18; प्रेरितों 4:11; 1 पतरस 2:7; मरकुस 12:10)। "उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारकर्ता ठहराकर अपने दाहिने हाथ पर उच्च कर दिया" (प्रेरितों 5:31)। इससे तात्पर्य यह है कि मसीह ज़िन्दा है और उसके पास सारा अधिकार है, और वोह हमारे और परमेश्वर के बीच में एक मध्यस्थ है। (रोमियों 8:34; इब्रानियों 1:3; 7:25; 8:11, 35; 1 यूहन्ना 2:1) मसीह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है (लूका 1:32, 33; प्रकाशित. 17:14; 19:16)। मसीह आज परेमश्वर के साथ स्वर्ग में है, और हमें अपना मन इसलिए परमेश्वर और स्वर्ग में की आत्मिक बातों पर लगाना चाहिए। (कुलुस्सियों 3:1-2)।

अनुग्रह से उद्धार

हर एक इनसान के लिए पाप का दण्ड मृत्यु है। किन्तु परमेश्वर का अनुग्रह हमारा पाप से उद्धार करता है। अनुग्रह का अर्थ है: "जिसे हम अपने बल पर प्राप्त नहीं कर सकते।" अनुग्रह का अर्थ हम "खोए हुए पुत्र" की कहानी से बखूबी समझ सकते हैं। (लूका 15:11-32)। वोह पुत्र अपना सब कुछ लेकर अपने घर को छोड़कर चला गया था। अपना सब कुछ उसने बुरे कामों में लगाकर बर्बाद कर दिया था। जब उसके पास कुछ भी नहीं बचा था, तब अपना मन फिराकर उसने निश्चय करके कहा था कि अब मैं अपने पिता के पास वापस जाऊँगा और उससे क्षमा माँगकर निवेदन करूंगा कि वोह मुझे अपने घर में एक नौकर की ही तरह रख ले। पर जब वोह वापस अपने पिता के पास गया था, तो पिता ने उसे ऐसे स्वीकार कर लिया था जैसे कि उसने कोई गलती की ही नहीं थी। अर्थात उसे दण्ड मिलना चाहिए था, पर वास्तव में उसे प्रेम मिला।

हम कुछ भी देकर या करके उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते। यह असम्भव है। हम सब के पाप परमेश्वर के विरुद्ध हैं। अच्छे और भलाई के काम करना तो हमारे लिए अनिवार्य है, परमेश्वर ने इसी के लिए हमें सृजा है। पर अपने पापों से उद्धार पाने के लिए हम कोई अच्छे काम नहीं कर सकते। यदि हम अच्छे काम करते भी हैं, तो हम उस दास के समान हैं, जिसने कहा था "हमने केवल वही किया है जो हमें करना चाहिए था" (लूका 17:10) इसीलिए बाइबल में एक स्थान पर लिखा है, कि हमारा उद्धार भले कामों के द्वारा नहीं हो सकता। (गलतियों 2:16)। यदि कामों के

द्वारा उद्धार पाना सम्भव होता, तो वोह हमारा अधिकार बन जाता। तब कोई भी पाप करके हम अच्छे काम कर लेते और पाप से स्वयं ही उद्धार पा लेते। परमेश्वर और उसके अनुग्रह की तब हमें कोई आवश्यकता ही नहीं होती। (रोमियों 4:1-8)। जैसे कि पौलुस ने कहा था : "यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा।" (रोमियों 11: 5-6; 2 तिमुथियुस 1:9)।

उद्धार पाने के लिए मनुष्य को नम्र बनने की आवश्यकता है। यदि हम कुछ भी करके किसी भी तरह से अपनी मुक्ति स्वयं कर पाने में सक्षम हों, तो हमें अपने आप पर घमण्ड होगा। परन्तु हमारा उद्धार केवल अनुग्रह से ही सम्भव है (रोमियों 3:27; इफिसियों 2:8-9)। प्रेरित पौलुस बड़ा ही पढ़ा लिखा और योग्य व्यक्ति था, और इसीलिए उसे अपनी योग्यताओं पर घमण्ड हो सकता था। (2 कुरिन्थियों 11:1-12:13)। परन्तु पौलुस का कहना था "मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं।" (1 कुरिन्थियों 15:10) क्या पौलुस को किसी बात पर घमण्ड था? उसे परमेश्वर के उस प्रेम पर घमण्ड था जो परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर दिखाया था। उसने कहा था, "पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का।" (गलतियों 6:14)। "जो घमण्ड करे वोह प्रभु में घमण्ड करे" (1 कुरिन्थियों 1:31; 2 कुरिन्थियों 10:17)।

मुक्ति परमेश्वर का बरदान है, क्योंकि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से ही होता है। पौलुस ने कहा था, कि हम परेमश्वर के "अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत में धर्मी ठहराए जाते हैं।" (रोमियों 3:24)। "परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।" (रोमियों 6:23; 2 कुरिन्थियों 9:14-15; प्रकाशित. 22:17)। अब यदि उद्धार एक वरदान है और अनुग्रह से प्राप्त होता है, तो क्या इसका अर्थ यह

है कि उद्धार पाने के लिए हमें कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है? वास्तव में यह सच नहीं है, और अब आगे इस पुस्तक में हम इसी बात पर विचार करेंगे कि उद्धार पाने के लिए मनुष्य को क्या करने की आवश्यकता है। पर इससे पहले हम इस बात पर ध्यान देंगे कि जबकि उद्धार एक वरदान है और परमेश्वर के अनुग्रह से मिलता है, तो फिर उसे प्राप्त करने के लिए हमें कुछ करने की ज़रूरत क्यों है?

उद्धार एक वरदान तो है, पर हमें स्वयं उसे प्राप्त करना ज़रूरी है। अनुग्रह से उद्धार होता है, पर "विश्वास के द्वारा" (इफिसियों 2:8)। ऐसे ही, मनुष्य को मन फिराकर परमेश्वर की आज्ञा मानना भी उद्धार पाने के लिए ज़रूरी है। सो, उद्धार पाने के लिए क्या ज़रूरी है? हमारा विश्वास? या परमेश्वर का अनुग्रह? परमेश्वर की आज्ञा मानना? या परमेश्वर का अनुग्रह? इस बात को समझने के लिये हम एक छोटा सा उदाहरण देखेंगे। मान लें कि दोपहर के वक्त आप अपने दो दोस्तों के साथ एक कमरे में हैं जिसमें एक खिड़की बनी हुई है। अब यदि आप अपने दोनों मित्रों से पूछते हैं कि उस कमरे में रोशनी कहां से आ रही है। और उनमें से एक जवाब देकर कहता है: "खिड़की से में होकर आ रही है।" पर दूसरा कहता है, कि "वोह सूरज का प्रकाश है।" अब उन दोनों में सही कौन है? दोनों सही हैं। प्रकाश सूर्य से ही आ रहा है, पर उस कमरे में उस खिड़की के द्वारा ही आ रहा है। प्रकाश का स्रोत तो सूर्य ही है, पर उस कमरे में प्रकाश खिड़की के "द्वारा" प्रवेश कर रहा है।

ऐसे ही हमारा उद्धार भी है। जैसे कि प्रकाश का स्रोत सूर्य है, वैसे ही हमारा उद्धार करनेवाला परमेश्वर है। परन्तु परमेश्वर किसी भी मनुष्य को ज़बरदस्ती उद्धार नहीं देता। मनुष्य को उसके उद्धार को स्वीकार करने के लिए अपने मन के द्वार को खोलने की आवश्यकता है अर्थात मनुष्य के मन में विश्वास आना चाहिए

(इफिसियों 2:8; रोमियों 5:1:2)। उसे अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा पाने के लिए प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना चाहिए। इससे यह अभिप्राय नहीं है कि ऐसा करके हम अपने कामों से या अपने बल से उद्धार प्राप्त कर रहे हैं। किन्तु ऐसा करने का अभिप्राय परमेश्वर की आज्ञा मानने से है। जैसे कि पौलुस ने एक जगह लिखकर कहा था, कि "उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान (बपतिस्मा) और पवित्रात्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।" (तीतुस 3:5; प्रेरितों 2:38; 22:16; 1 पतरस 3:21)

अनुग्रह के द्वारा उद्धार प्राप्त कर लेने का अभिप्राय यह नहीं है, कि फिर इनसान कैसा भी जीवन व्यतीत करे। मनुष्य को परमेश्वर के अनुग्रह को ऐसे नहीं लेना चाहिए कि वोह परमेश्वर के अनुग्रह से कभी वंचित नहीं हो सकता। अर्थात ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि चाहे हम कुछ भी करें, परमेश्वर अपने अनुग्रह से हमें क्षमा कर देगा। (रोमियों 6:1-2; 2 परतस 2:17-22; यहूदा 4)। अनुग्रह के सम्बन्ध में पौलुस ने इस प्रकार कहा था: "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं, किन्तु परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों 2:8-9)।

विश्वास

क्योंकि मनुष्य का उद्धार "विश्वास के द्वारा" होता है (इफिसियों 2:8; रोमियों 1:16), इसलिये यह समझना आवश्यक है कि इसका वास्तव में अर्थ क्या है। यीशु ने कहा था, "यदि तुम विश्वास नहीं करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना 8:24; प्रेरितों 15:9)। हमें विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर है। (इब्रानियों 11:6)। हमें यह भी विश्वास करना चाहिए कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। (1 यूहन्ना 5:1; रोमियों 10:9-10) यीशु ने ही प्रतिज्ञा करके कहा था, कि यदि हम उसमें विश्वास लाएंगे तो नाश नहीं होंगे, परन्तु अनन्त जीवन पाएंगे। (यूहन्ना 3:16, 18, 36; 6:35; 11:26; 20:30-31; प्रेरितों 10:43; 16:31)। लिखा है, कि मनुष्य विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरेगा (रोमियों 3:24, 28; 5:1; गलतियों 2:16; 3:24)। सो जबकि विश्वास उद्धार पाने के लिए इतना महत्वपूर्ण है, तो इसका तात्पर्य क्या है?

विश्वास या ईमान का आरम्भ ज्ञान से होता है। अर्थात् जब मनुष्य कुछ देखता या सुनता है तो उसके मन में विश्वास उत्पन्न होता है। पौलुस ने कहा था :

फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय में सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें? .....सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है (रोमियों 10:14-17)।

इसलिए जब कोई व्यक्ति सच्चे परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह के बारे में सुनता है तब उसके भीतर विश्वास पैदा

होता है। परन्तु जिस विश्वास के द्वारा मनुष्य को उद्धार मिलता है, वोह केवल मन का विश्वास नहीं है। मन में विश्वास का आना विश्वास का आरम्भ मात्र है। उदाहरण के रूप से, मैं किसी डॉक्टर के पास जाऊं और मेरा पूरा विश्वास हो कि वोह एक अच्छा डॉक्टर है, और मेरा यह भी विश्वास हो कि जो दवाई वोह डॉक्टर मुझे देगा उसके सेवन से मुझे फ़ायदा होगा। पर उस दवाई का सेवन मैं वास्तव में उस प्रकार से न करूं जैसे कि डॉक्टर ने बताया था। तो निश्चित रूप से मुझे कोई लाभ नहीं होगा। ऐसे ही विश्वास भी है, यदि केवल मन में बसनेवाला विश्वास है, पर जो परमेश्वर कहता है उसे नहीं करता, तो ऐसा विश्वास व्यर्थ है। इसी प्रकार के विश्वास को सम्बोधित करके याकूब ने कहा था, "दुष्टात्मा भी विश्वास करते और थरथराते हैं। (याकूब 2:19)। दुष्टात्माएं विश्वास करती हैं, कि परमेश्वर है। उन्हें परमेश्वर से भय भी लगता है। पर वे परमेश्वर की बात नहीं मानतीं।

जिस विश्वास के द्वारा मनुष्य को उद्धार प्राप्त होता है, उसमें एक भरोसा होता है। उद्धार उस विश्वास से होता है जो आज्ञा मानता है। बाइबल में हम अनेक ऐसे लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिन्होंने परमेश्वर में अपने विश्वास को उसकी आज्ञाओं पर चलकर दिखाया था (इब्रानियों 11:1-38)। यदि हमारा विश्वास केवल मन में बसनेवाला ही विश्वास है, तो ऐसा विश्वास एक मरा हुआ विश्वास है। (याकूब 2:14-26) उद्धार दिलानेवाला विश्वास ज़िन्दा विश्वास है, जो कुछ करके दिखाता है। (गलतियों 5:6)। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यह सिखाते हैं कि एक मसीही बनने के लिये यदि कोई यह कह दे कि मैं मसीह में विश्वास करता हूं तो ऐसा कह देने भर से वोह व्यक्ति एक मसीही बन जाता है। कुछ कहते हैं कि एक काग़ज पर यह लिखने से कि मैं मसीह में विश्वास करता हूँ, कोई मसीह बन जाता है। परन्तु मन का विश्वास जब तक प्रभु की आज्ञा मानकर विश्वास को व्यक्त न करे, ऐसा विश्वास

अप्रर्याप्त है। यूहन्ना कहता है, "जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है, परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वोह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यूहन्ना 3:36)।

मन-फिराना

प्रभु यीशु मसीह ने अपनी शिक्षा में मुख्य रूप से मन-फिराने पर विशेष बल दिया था। (मत्ती 3:2; 4:17; मरकुस 1:15; 6:12)। आरम्भ में मसीही लोगों के प्रचार में भी मन फिराने पर विशेष ज़ोर दिया गया था। (प्रेरितों 2:38; 3:19; 26:20)। स्वर्ग पर वापस जाने से पहले यीशु ने कहा था, कि "यरुशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा" (लूका 24:47)। क्योंकि पाप पृथ्वी पर सब जगह है, इसलिए हर जगह पर लोगों को मन फिराने की आवश्यकता है। पौलुस ने कहा था कि "परमेश्वर सब जगह सब लोगों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" (प्रेरितों 17:30)। उद्धार पाने के लिए मन-फिराना अति आवश्यक है। (प्रेरितों 2:38; 3:19; 11:18)। वास्तव में, परमेश्वर चाहता है कि हर एक जन पृथ्वी पर अपना मन फिराकर उसके पास वापस आ जाए। (2 पतरस 3:9)। जब कोई व्यक्ति पाप को छोड़कर परमेश्वर के पास वापस आता है, तो इससे स्वर्ग में आनन्द आता है। (लूका 15:7, 10)

मन-फिराने का अर्थ क्या है? मन फिराने का अर्थ है, अपने मन को प्रत्येक पाप और बुराई से मोड़ लेना, धार्मिक और संसारिक दृष्टिकोण से मन को बदलना। प्रेरित पौलुस ने एक जगह यूँ कहा था: "क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता।" (2 कुरिन्थियों 7:10)। यहां शोक के कारण पश्चाताप करने का तात्पर्य इस बात से नहीं है, कि यदि कोई व्यक्ति कोई गलत या

बुरा काम करते हुए पकड़ा जाए तो वोह इस बात से दुखी हो या पछताए कि मैं पकड़ा क्यों गया। परन्तु बाइबल के अनुसार पश्चाताप करने का अर्थ है, शोकित होकर निश्चय करना कि बुराई से मन फिराकर अब मैं सही काम करूंगा, अर्थात्, न केवल मन में दुखी होना, पर अपना मन बुराई में फिराना। (मत्ती 21:28-31)। मन फिराकर हम अपने जीवन की दिशा बदलने का निश्चय करते हैं। बाइबल में कई जगह पर इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि जब कोई मन फिराए तो उसे अपने बदले हुए जीवन और कामों से इसको अन्य लोगों के सामने प्रकट करना चाहिए। (मत्ती 3:8; लूका 3:8; प्रेरितों 26:20) मन-फिराना जितना कहने में आसान लगता है, उतना ही करने में कठिन है। मन-फिराने का अर्थ है अपनी मर्ज़ी पर चलना छोड़कर परमेश्वर की इच्छा पर चलने का संकल्प करना।

आज्ञा-मानना

यदि एक बालक अपने पिता से कहे कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, पर पिता की आज्ञा पर न चले, तो अपने कामों से वोह अपने प्रेम के दावे को झूठा साबित करता है। (मत्ती 21:28-31)। परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह से प्रेम करने का अर्थ है, वोह सब करना जो उन्होंने आज्ञा दी है। बाइबल में लिखा है: "क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें।" (1 यूहन्ना 5:3; 1 यहून्ना 2:5; 2 यूहन्ना 6)। यीशु, ने कहा था: "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" (यूहन्ना 14:15; यूहन्ना 15:10); सत्य को मानने से हम अपने मन को पवित्र करते हैं। (1 पतरस 1:22)। जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं केवल वही उद्धार पाएंगे (इब्रानियों 5:9; प्रेरितों 10:34, 35)। जो लोग यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते परमेश्वर उनका न्याय करेगा। (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

सिर्फ़ यह कह देने भर से कि मैं यीशु में विश्वास करता हूं या मैं उसका अनुयायी हूं, कोई वास्तव में एक मसीही नहीं बन जाता। जैसा कि यीशु ने कहा था: "जो मुझसे 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती 7:21)। परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना कोई कठिन कार्य नहीं है। पर जो लोग उद्धार पाकर स्वर्ग में प्रवेश करने की इच्छा रखते हैं वे परमेश्वर की हर एक आज्ञा को मानने में सदैव तत्पर रहते हैं। यूहन्ना ने लिखकर कहा था कि "उसकी आज्ञा कठिन नहीं

है।" (1 यूहन्ना 5:3)। यदि मनुष्य इस बात पर विचार करके देखे कि मसीह यीशु ने हम सबके लिए कितना कुछ किया है; वोह स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया था और हम सबके उद्धार के लिए उसने क्रूस पर अपनी जान दी थी; तो कोई भी व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक उसकी आज्ञाओं को मानेगा।

स्वेच्छा

उद्धार परमेश्वर का वरदान है और उसके अनुग्रह से ही मिलता है, पर शर्त-युक्त है। सुसमाचार को सुनना ही पर्याप्त नहीं है, पर विश्वास लाना भी ज़रूरी है। परमेश्वर क्षमा करने को तैयार है किंतु मनुष्य को पाप से मन फिराना ज़रूरी है। परमेश्वर दयावान है, पर हमें उसकी आज्ञापालन करना ज़रूरी है। यीशु ने अपने बलिदान के द्वारा मनुष्य के पापों का प्रायश्चित कर दिया है, पर इसका लाभ उन्हीं लोगों को प्राप्त होता है जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं। बाइबल में हमें दो मार्गों के बारे में बताया गया है, अर्थात एक जीवन का मार्ग है और दूसरा मार्ग है मृत्यु का (व्यवस्था-विवरण 30:15; प्रेरितों 2:40)। हमें स्वयं निश्चय करना है, कि कौन से मार्ग पर हम चलना चाहते हैं। यीशु को हम मान सकते हैं, या उसे नहीं मानने का निश्चय भी हम कर सकते हैं। (यूहन्ना 14:6; मत्ती 11:28-30)। परमेश्वर ने हमें बताया है कि अच्छाई क्या है और सही काम करने का फल क्या है। और उसने हमें यह भी बताया है कि बुराई क्या है और उसका फल क्या है। किन्तु परमेश्वर किसी को भी अच्छाई या बुराई करने के लिये विवश नहीं करता।

परमेश्वर की आज्ञा है कि हम विश्वास लाएं, मन-फिराएं और उसकी आज्ञा मानें, किन्तु यह हमारी इच्छा है कि हम उसकी बात मानें या न मानें। कुछ लोगों की यह भी गलत धारणा है, कि कोई भी मनुष्य उद्धार पाने के लिए स्वयं कुछ नहीं कर सकता क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही से यह ठहराया हुआ है कि कौन

उसके पास आएगा और कौन नहीं आएगा। अर्थात् कौन उद्धार पाएगा और कौन नहीं पाएगा यह परमेश्वर ने पहले से ही निश्चित करके रखा हुआ है, इसीलिए इस विषय में मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता, ऐसा कुछ लोगों का मानना है। किन्तु ऐसी सोच गलत है। क्योंकि जो लोग अपने पाप का दण्ड पाएंगे, वे इसलिए पाएंगे क्योंकि उन्होंने अपना मन फिराकर परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी है। बड़ी ही स्पष्टता से बाइबल हमें बताती है कि मनुष्य स्वयं अपनी मर्ज़ी से अच्छाई और बुराई को चुन सकता है। (याकूब 4:17; यूहन्ना 7:17; प्रेरितों 13:46)। परमेश्वर मनुष्य को अपने पास आने को कहता है ताकि मनुष्य उसकी आज्ञाओं पर चलकर अपने पापों से उद्धार पा ले और स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी पाए। (1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 1 तिमुथियुस 6:12; इब्रानियों 9:15; 1 पतरस 2:9)। सुसमाचार के प्रचार के द्वारा परमेश्वर आज भी लोगों को अपने पास बुला रहा है। (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। मनुष्य चाहे तो अपना मन-फिराकर हृदय-परिवर्तन के साथ उसके पास कभी भी आ सकता है।

परमेश्वर ने किसी भी व्यक्ति के लिये पहले से निश्चित या निर्धारित करके नहीं रखा हुआ है, कि कौन सा व्यक्ति अपना मन फिराकर और विश्वास करके उसके पास आएगा, और कौन उसके पास नहीं आएगा। यह सही है कि परमेश्वर सर्वज्ञानी है, और उसने कुछ बातों को पहले ही से सुनिश्चित करके ठहराया हुआ है। परमेश्वर को यह पहले ही से ज्ञात था कि मसीह पृथ्वी पर जगत के लोगों का पाप से उद्धार करने के लिए आएगा। (प्रेरितों 2:23; 1 पतरस 1:18-20)। बाइबल में हम परमेश्वर की पहले से ठहराई हुई मनसा के बारे में भी पढ़ते हैं। पर इसका तात्पर्य इस बात से नहीं है कि कौन-कौन से लोग उद्धार पाएंगे और कौन नहीं पाएंगे। व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर ने प्रत्येक को उद्धार पाने के लिये नहीं चुना है, पर सामूहिक रूप से उसने दो प्रकार के

लोगों को चुना है। अर्थात् वे जो उसकी इच्छा को मानकर और उस पर चलकर परमेश्वर के पास आएंगे, और इस प्रकार मुक्ति या उद्धार प्राप्त करके उसके स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, और दूसरे वे हैं जो परमेश्वर की इच्छा को न मानकर हमेशा उससे दूर रहेंगे। (रोमियों 8:28-30; इफिसियों 1:4-5, 11; 2 थिस्सलुनिकियों 2:13; 1 पतरस 1:2-3)।

ऐसा सोचना कि परमेश्वर ने स्वयं ही यह पहले से सुनिश्चित कर लिया है कि कौन सा व्यक्ति स्वर्ग में जाएगा और कौन सा नहीं जाएगा, मनुष्य को चुनाव करने का अवसर दिए बिना, गलत धारणा है। यह ऐसे ही होगा जैसे कि कोई शिक्षक अपने विद्यार्थियों को बिना परीक्षा लिए ऐसे ही पास और फेल कर दे। परन्तु यह दूसरी बात है कि यदि शिक्षक यह पहले से सुनिश्चित कर ले कि जो विद्यार्थी 90 से 100 प्रतिशत नम्बर लाएंगे वे पहला दर्जा पाएंगे और जो 80 से 89 प्रतिशत लाएंगे वे दूसरा दर्जा पाएंगे। इस बात में चुनाव दोनों तरफ से है। ऐसे ही परमेश्वर ने भी अपनी इच्छा को मनुष्यों पर प्रकट किया है, इस निश्चय के साथ कि जो लोग उस की इच्छा को मानेंगे वे उद्धार पाएंगे परन्तु जो लोग उसकी इच्छा को नहीं मानेंगे वे उद्धार नहीं पाएंगे। मानना और नहीं मानना स्वयं मनुष्य को ही यह निश्चय करना है। चुनाव करने का निश्चय परमेश्वर ने स्वयं मनुष्य को ही दिया है।

बपतिस्मा

बपतिस्मा लेना इसलिए बड़ा ही ज़रूरी है क्योंकि बपतिस्मा लेने से ही एक व्यक्ति मसीह की कलीसिया में शामिल होता है। "बपतिस्मा" वास्तव में एक यूनानी भाषा का शब्द है। बाइबल के अनुसार, बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य को जल के भीतर गाड़ा या दफ़न किया जाता है। "बपस्तिमा" शब्द का वास्तव में अर्थ ही यही है, यानी गाड़े जाना। इसका अर्थ न तो छिड़काव करना है और न ही उन्डेलना है। यदि कोई इस यूनानी शब्द का अर्थ न भी समझे, तौभी बाइबल से पढ़कर हम जानते हैं कि बपतिस्मा लेने के द्वारा एक व्यक्ति को जल के भीतर गाड़ा जाता है। मन फिराकर पानी के भीतर गाड़े जाने का अभिप्राय इस बात से है कि इस प्रकार मनुष्य के पुराने जीवन का अंत हो चुका है। मनुष्य, बपतिस्मा लेने के द्वारा, जल के भीतर गाड़ा जाता है, यह दिखाता है कि पुराना व्यक्ति मर चुका है और जल में से बाहर निकलकर उस व्यक्ति का एक नया जन्म होता है। उसे मसीह में होकर एक नया जीवन मिल जाता है जिसमें वोह एक नए जीवन की चाल चलता है। (रोमियों 6:3-6; कुलुस्सियों 2:12)।

बाइबल से हम देखते हैं कि जब लोग बपतिस्मा लेते थे तो बपतिस्मा लेने के लिए वे सब उस स्थान पर जाते थे जहां अधिक जल होता था, क्योंकि जल में गाड़े जाने के लिए अधिक जल की आवश्यकता होती है। (यूहन्ना 3:23; मरकुस 1:4-5; प्रेरितों 8:36)। यदि बपतिस्मा पानी छिड़ककर दिया जाना सम्भव होता तो बपतिस्मा देनेवाला व्यक्ति किसी बर्तन में पानी लेकर लोगों के पास चला

जाता और सब पर छिड़काव कर देता। परन्तु परमेश्वर के वचन की शिक्षा के अनुसार बपतिस्मा केवल जल के भीतर गाड़े जाकर ही लिया जाता है। जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लेने के द्वारा यह व्यक्त किया जाता है कि जिस व्यक्ति ने बपतिस्मा लिया है वोह पाप के पुराने जीवन के लिए मर गया है, और गाड़ा जा चुका है और एक नए जीवन की चाल चलने के लिए पानी की कब्र में से बाहर आ गया है।

बपतिस्मा किसे लेना चाहिए? बाइबल के अनुसार, बपतिस्मा उन्हीं लोगों को लेना चाहिए जो मसीह में विश्वास लाकर अपना मन फिराते हैं। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। उन्हें बपतिस्मा लेना चाहिए जो मसीही बनने और मसीह का अनुसरण करने का निश्चय करते हैं। छोटे बच्चे ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए छोटे बच्चों को बपतिस्मा देना बिल्कुल गलत बात है। कुछ लोग ऐसा करते हैं। परन्तु ऐसी शिक्षा न तो यीशु मसीह ने दी है और न ही उसके प्रेरितों ने। यह मुनष्यों की बनाई हुई रीति है। किसी भी छोटे बच्चे को बपतिस्मा देने की आवश्यकता नहीं है। छोटे बच्चों में पाप नहीं है। बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए लिया जाता है। (मत्ती 18:2-4; 19:13-15; रोमियों 9:11; 1 कुरिन्थियों 14:20; व्यवस्था. 1:39)। यदि कोई छोटा बच्चा मर जाता है, तो वोह स्वर्ग में जाएगा, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का ही है।

कुछ लोगों का मत है कि छोटे बच्चे अपने जन्म से ही पापी होते हैं; इसलिए उन्हें बपतिस्पा देना चाहिए, ताकि उन्हें उस पाप से मुक्ति मिल जाए जो आदम से उन्हें मीरास में मिला है, और इसके लिए वे इफिसियों 2:3 और भजन. 51:5 का हवाला देते हैं। परन्तु जब पौलुस ने उन्हें जो इफिसुस में रहते थे लिखकर कहा था कि वे "स्वभाव ही से क्रोध की संतान थे" तो उसके कहने का तात्पर्य यह नहीं था कि वे अपने जन्म से ही पापी थे, या वे पापी जन्मे थे। किसी के "संतान" होने का अभिप्राय इस बात से

है कि उस व्यक्ति में वही बातें हैं जिनकी वोह संतान हैं। (मरकुस 3:17; यूहन्ना 12:36; प्रेरितों 4:36; 1 थिस्सलुनीकियों 5:5; इफिसियों 2:2; 5:6:8)। अर्थात इफिसुस में अन्य लोगों की ही तरह वे भी पाप में अपना जीवन बिता रहे थे। स्वभाव का अभिप्राय जन्म से नहीं है। जिस परिस्थिति में कोई व्यक्ति रहता है वही उसका स्वभाव बन जाता है। (1 कुरिन्थियों 11:14; रोमियों 2:14)। जिस प्रकार के माहौल या लोगों के बीच में इफिसुस के लोग रह रहे थे, वैसा ही उनका स्वभाव बन गया था। ऐसे ही भजन. 51:5 में दाऊद के कहने का अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि वोह अपने जन्म से ही एक पापी है। पर वोह कह रहा है, कि पाप उसके जन्म लेने से पहले ही से विद्यमान था, और जब वोह उत्पन्न हुआ था उस समय भी पाप वर्तमान था। अर्थात, मनुष्य का जन्म पृथ्वी पर एक ऐसे वातावरण में होता है जहाँ सब तरफ पाप ही पाप है; और बड़ा होकर इसलिए प्रत्येक बालक स्वयं के पाप के कारण पापी बन जाता है। (यशायाह 48:8; 1 शुमुएल 20:30)।

बपतिस्मा लेने का विशेष उद्देश्य पापों की क्षमा प्राप्त करने से है। एक नन्हें बालक को इसलिए बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है। जो व्यक्ति बपतिस्मा लेता है, उसे इस बात की समझ होनी चाहिए कि वोह क्या कर रहा है। बिना समझ के, मात्र पानी में बपतिस्मा लेने के नाम से चले जाना व्यर्थ होगा। क्योंकि महत्व जल का नहीं है, किन्तु परमेश्वर की आज्ञा मानने का है। (1 पतरस 3:21)। इसलिए नासमझ छोटे बालकों को बपतिस्मा देना बिल्कुल व्यर्थ बात है। इससे वास्तव में बाद में बड़ी ही दिक्कत भी होती है, क्योंकि जब वे बच्चे बड़े हो जाते हैं और जब हकीकत में उन्हें बपतिस्मा लेने की ज़रूरत होती है तो वे यह कहकर टाल देते हैं कि उनका बपतिस्मा तो हो चुका है। सो याद रखें, कि बपतिस्मा उन लोगों को लेना चाहिए जो यीशु मसीह में विश्वास लाते है, और पाप से अपना मन फिराते हैं और मसीह के अनुयायी

बनना चाहते हैं। (प्रेरितों 8:12, 36; 16:33; 18:8)।

बपतिमा क्यों लेना चाहिए? इस बात पर बाइबल में कई जगह प्रकाश डाला गया है, अर्थात, प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा मानने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए (मत्ती 28:18,19), और पापों की क्षमा पाने के लिए (प्रेरितों 2:38), पापों को धो डालने के लिए (प्रेरितों 22:16; इब्रानियों 10:22); पवित्रात्मा प्राप्त करने के लिए (प्रेरितों 2:38; 5:32; रोमियों 8:15; 2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5; गलतियों 4:6; इफिसियों 1:13, 14), उद्धार पाने के लिए (मरकुस 16:15, 16; 1 पतरस 3:21), मसीह के साथ एक होने के लिए (रोमियों 6:3-6), मसीह को पहन लेने के लिए (गलतियों 3:26, 27), मसीह की कलीसिया अर्थात उसकी देह में शामिल होने के लिए (इफिसियों 1:22-23; प्रेरितों 2:41, 47), पवित्र बनने के लिए (इफिसियों 5: 25-27), और नया जन्म प्राप्त करने तथा पवित्रात्मा के द्वारा नया बनाए जाने के लिए (यूहन्ना 3:5; तीतुस 3:5)।

यदि कोई मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास लाकर अपना मन न फिराए, तो बपतिस्मा लेने से कोई फ़ायदा नहीं होगा। केवल दिखाने के लिये, या किसी के मन की संतुष्टि के लिए किसी के कहने से बपतिस्मा ले लेने से किसी को भी कोई आत्मिक लाभ नहीं मिलेगा। (1 पतरस 3:21; यूहन्ना 3:3-8)। जब कोई प्रभु की आज्ञा मानकर, प्रभु के कहे अनुसार, अपने पापों की क्षमा के लिये सच्चे मन से बपतिस्मा लेता है, तो वोह अपने विश्वास को व्यक्त करता है। (प्रेरितों 22:16; रोमियों 10:13), और सच्चे मन से अपने आप को परमेश्वर के हाथों में सौंपता है (1 पतरस 3:21)। परमेश्वर के वचनानुसार, बपतिस्मा लेने पर ही मनुष्य का सम्पर्क मसीह की मृत्यु और उसके बहाए लहू के साथ स्थापित होता है। (रोमियों 6:3-6)। बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य न केवल मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने की समानता में ही उसके साथ एक हो

जाता है, पर उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ एक हो जाता है। (1 परतस 3:21)। यह एक ऐतिहासिक सच भी है कि बपतिस्मा ही एक ऐसी चीज़ है जिसके कारण एक मसीही और एक ग़ैर मसीही में फ़र्क किया जाता है, अर्थात जिसका बपतिस्मा हुआ है केवल उसे ही एक मसीही माना जाता है।

बपतिस्मा लेने से पहले किसी व्यक्ति का विश्वास मसीह में हो सकता है, और वोह अपने आप को यद्यपि मसीह का एक अनुयायी भी मानता हो, परन्तु बाइबल के कथनानुसार न तो वोह मसीह की समानता में उसके साथ एक हुआ है और न वोह मसीह के भीतर है (रोमियों 6: 3-6; गलतियों 3:27)। बपतिस्मा लेना एक विवाह के बन्धन में बंधने के समान है। क्योंकि बपतिस्मा लेते समय मनुष्य मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करता है, और उसे अपना प्रभु मानता है (प्रेरितों 8:36-38; 1 तीमुथियुस 6:12-13; 1 यूहन्ना 4:2-3, 15; मत्ती 10:22-33; लूका 12:8-9; रोमियों 10:9-10)। बाइबल की शिक्षा अनुसार यदि किसी का बपतिस्मा नहीं हुआ है, तो वोह मसीह के बाहर आशा-रहित है। (इफिसियों 2:12)। किन्तु जो लोग मसीह में हैं, उसमें उन्हें सब प्रकार की आत्मिक आशीषें प्राप्त हैं (इफिसियों 1:3), अर्थात, उद्धार (2 तीमुथियुस 2:10) और पापों की क्षमा (इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:14)। बाइबल के अनुसार, जब कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेता है तो उसी समय परमेश्वर उसे संसार से अलग करके मसीह में मिला लेता है। (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27)।

जैसा कि हम पहले भी देख चुके हैं, बपतिस्मा केवल उन्हीं लोगों को लेना चाहिए जो मसीह में विश्वास लाते हैं (मरकुस 16:16), और पाप से अपना मन फिराते हैं (प्रेरितों 2:38), और जो मसीह में होकर अपना जीवन व्यतीत करने का निश्चय करते हैं (1पतरस 3:21)। यदि आप यीशु मसीह में यह विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, तो आपको चाहिए कि

आप उसमें बपतिस्मा लेकर उसे पहन लें और एक मसीही और मसीह की कलीसिया के सदस्य बनें। सो आप को क्या करना चाहिए? आपको किसी ऐसे व्यक्ति या सुसमाचार प्रचारक को सम्पर्क करना चाहिए जो यह मानता है कि बपतिस्मा लेने का अर्थ पानी के भीतर गाड़े जाना है, और उससे बपतिस्मा लें। किसी भी ऐसे व्यक्ति की बात पर विश्वास न करें जो आप से यह कहे कि बपतिस्मा लेना केवल एक धार्मिक संस्कार है और उसका उद्धार पाने से कोई सम्बन्ध नहीं है। केवल बाइबल पर ही विश्वास करें (प्रेरितों 2:38; 22:16; मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21)। केवल वही मानें जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने बाइबल में दी है।

बाइबल में यह नहीं बताया गया है कि बपतिस्मा लेते समय किन शब्दों को कहा जाना चाहिए, अर्थात जो व्यक्ति बपतिस्मा दे रहा है उसे कुछ कहना चाहिए या नहीं। विशेष बात यह है कि जब परमेश्वर के वचन को सुनकर कोई जन यह निश्चय कर ले कि अब उसे बपतिस्मा लेना चाहिए, तो उसे तुरन्त प्रभु की आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये और मसीह को पहन लेने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। ख़ास बात यह है कि आप यीशु में अपने सारे मन से विश्वास करके ऐसा करें। बपतिस्मा लेने के लिये आप किसी ऐसे स्थान पर जा सकते हैं जहां अधिक मात्रा में पानी है, जैसे कोई तालाब या नदी, या किसी बड़े टब में पानी भर के भी बपतिस्मा उसमें लिया जा सकता है। जो व्यक्ति बपतिस्मा देता है वोह इस प्रकार कहकर बपतिस्मा दे सकता है, "मैं आप के इस विश्वास पर कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, आपको पिता, और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा देता हूं।" (मत्ती 28:19; प्रेरितों 2:38)। बपतिस्मा देनेवाले व्यक्ति को उसे जो बपतिस्मा ले रहा है पूरी तरह से पानी के भीतर गाड़ देना या दफ़न कर देना चाहिए और फिर तुरन्त उसे ऊपर उठाकर खड़ा कर देना चाहिए ताकि वोह पानी में से बाहर आ सके। इसके बाद

परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिये एक प्रार्थना की जा सकती है।

बपतिस्मा ले लेने के बाद, आपको यह समझना चाहिए कि अब आप परमेश्वर की संतान है (1पतरस 2:2)। आप के भीतर अब परमेश्वर का आत्मा बास करता है। (1 कुरिन्थियों 6:11; इफिसियों 5:25-27; 1 कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19-20)। अब आपको मसीह ने अपनी उस कलीसिया में मिला लिया है जिसके लिये उसने लहू बहाया था। (मत्ती 16:18; प्रेरितों 20:28)। आपका नाम अब उस जीवन की पुस्तक में लिखा जा चुका है जो परमेश्वर के पास है (प्रकाशित. 20:15)। आपके पाप धोए जा चुके हैं (प्रेरितों 22:16)। पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि बपतिस्मा लेने के बाद आप कभी पाप करेंगे ही नहीं (रोमियों 7:15-25)। परीक्षाएं आप के सामने हमेशा आएंगी। परन्तु क्योंकि अब आप एक मसीही हैं, आपको पापों की क्षमा के लिये बार-बार बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप से कोई गलत काम हो जाता है, तो आप मन फिराकर परमेश्वर से प्रार्थना करके क्षमा मांग सकते हैं। (1 यूहन्ना 1:6-10)। आपको चाहिए कि आप ऐसे लोगों के साथ परमेश्वर की आराधना-उपासना करें जो आप की ही तरह केवल परमेश्वर के वचनानुसार ही चलना चाहते हैं। क्योंकि अब आप एक मसीही हैं, तो आपका आचरण और चाल-चलन भी एक मसीही का सा होना चाहिए। इसी विषय में अब हम आगे देखने जा रहे हैं।

मसीही जीवन

एक मसीही बन जाने के बाद आवश्यक है कि आप प्रभु में होकर एक पवित्र जीवन बिताएं। यदि कोई प्रभु को छोड़कर फिर से वैसा ही सांसारिक जीवन व्यतीत करने लगता है जैसा मसीही बनने से पहले था, तो वोह अपने उद्धार से वंचित हो सकता है। कुछ लोग ऐसा भी मानते हैं कि एक बार उद्धार पा लेने के बाद चाहे कोई कैसा भी जीवन बिताए वोह अपने उद्धार से कभी भी वंचित नहीं हो सकता, अर्थात एक बार बच गए तो सदा के लिये बच गए, चाहे कुछ भी करो। परन्तु बाइबल की शिक्षा के प्रकाश में ऐसी धारणा बिल्कुल ग़लत है (1 कुरिन्थियों 9:27; 10:5-12 गलतियों 5:1-4; 1 तीमुथियुस 4:1, 16; 2 तीमुथियुस 4:10; इब्रानियों 3:12; 6:4-8; याकूब 5:19-20; 2 पतरस 2:20-22; प्रकाशित. 2:4-5; लूका 8:11-15; यूहन्ना 15:1-14)। यदि ऐसा सच होता कि उद्धार पाने के बाद मनुष्य अपने उद्धार से कभी भी वंचित नहीं हो सकता, तो फिर एक मसीही बनने के बाद परमेश्वर का भय मानकर पवित्र जीवन निर्वाह करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। परमेश्वर का अनुग्रह केवल उद्धार देने के लिए ही प्रकट नहीं हुआ था, पर हमारे जीवनों को बेहतर और अच्छा बनाने के लिये भी प्रकट हुआ था। जैसा कि पौलुस ने कहा था: "क्योंकि परमेश्वर का वोह अनुग्रह प्रकट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मुख फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं" (तीतुस 2:11-12)।

सो जब कोई व्यक्ति एक मसीही बन जाता है, तो उसे कैसा जीवन बिताना चाहिए? पहली शताब्दी में अकसर मसीही लोगों को एक "मार्ग" पर चलनेवाले लोग कहा जाता था। (प्रेरितों 9:2; 19:9, 23; 22:4; 24:14, 22)। "मार्ग" शब्द का उपयोग मसीही लोगों को सम्बोधित करने के लिये इसलिये किया जाता था क्योंकि वे लोग एक ऐसा जीवन बिताते थे जो अन्य सभी लोगों से भिन्न, अलग और निराला था। प्रभु यीशु ने कहा था कि, "मार्ग मैं हूं" (यूहन्ना 14:6)। अर्थात वोह स्वर्ग में प्रवेश करने का मार्ग है। यीशु की शिक्षाओं को मानकर चलना ही उस "मार्ग" पर चलना है। यीशु ने शिक्षा देकर कहा था कि दो प्रकार के मार्ग हैं, एक संसार का और एक प्रभु का। एक मार्ग वोह है जो मनुष्य को नरक की ओर ले जाता है, और एक मार्ग ऐसा है जो मनुष्य को स्वर्ग में ले जाएगा। मसीही जीवन "धार्मिकता का मार्ग" है। (2 पतरस 2:21; मत्ती 7:13-14; लूका 13:23-24)।

क्योंकि मसीही जीवन एक विशेष "मार्ग" का जीवन है, इसलिये उस विशेष मार्ग पर चलने का ढंग भी अलग है। प्रेरित यूहन्ना ने इस सम्बन्ध में लिखकर यूं कहा था: "इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें हैं: जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसे ही चले जैसे वोह चलता था।" (1 यूहन्ना 2:6)। एक मसीही का चाल-चलन सांसारिक और अपवित्र नहीं होना चाहिए (रोमियों 8:4; इफिसियों 2:1-2; 4:17; कुलुस्सियों 3: 5-7; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 11; 1 यूहन्ना 1:6; 2:11)। पर जैसा कि बाइबल में लिखा है, उसे परमेश्वर के आत्मा के कहे अनुसार और प्रकाश में और सच्चाई में चलना चाहिए। (रोमियों 8:4; 2 कुरिन्थियों 5:7; गलतियों 5:16; इफिसियों 2:10; 4:1; 5:2,8, 15; कुलुस्सियों 1:10; 2:6; 4:5; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 1 यूहन्ना 1:7; 2 यूहन्ना 4,6; 3 यूहन्ना 3,4)।

एक मसीही व्यक्ति का चाल-चलन, और उसका आचरण मसीह में उसकी "बुलाहट" के अनुसार होना चाहिए। एक मसीही बनने पर, मनुष्य को अपने अधर्म के जीवन से जो पहले था मन फिराकर (इफिसियों 4:22), मसीह यीशु में एक नया जीवन बिताना चाहिए। (1 तीमुथियुस 4:12; याकूब 3:13; 1 पतरस 1:15; 2:12; 3:1-2, 16; 2 पतरस 3:11)। पौलुस ने इफिसुस में रहनेवाले मसीही लोगों से कहा था, "कि तुम पिछले चाल-चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार डालो। (इफिसियों 4:22; कुलुस्सियों 3:5-9)। और फिर उसने कहा था, कि "नए मनुष्यत्व को पहन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है। (इफिसियों 4:24; कुलुस्सियों 3:10)। मसीही जीवन वास्तव में एक अलग ही प्रकार का जीवन है।

सो मसीही जीवन की हम क्या परिभाषा दे सकते हैं? मसीही जीवन के लिये पुराने नियम की दस आज्ञाओं की तरह कोई विशेष नियम नहीं दिए गए हैं। जबकि बहुत सी ऐसी बातों का उल्लेख हमें नए नियम में अवश्य मिलता है जिन्हें एक मसीही जन को करना या नहीं करना चाहिए, परन्तु परमेश्वर का पुत्र स्वयं हमारे लिये एक आदर्श है। पौलुस ने जैसे कि लिखकर कहा था कि एक मसीही व्यक्ति का "नया मनुष्यत्व" ऐसा होना चाहिए कि वोह "परमेश्वर के अनुरूप" हो अर्थात "सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया हो।" (इफिसियों 4:24; कुलुस्सियों 1:10)। एक मसीही जन को "परमेश्वर का अनुकरण" करनेवाला होना चाहिए (इफिसियों 5:1)। प्रभु यीशु ने कहा था कि "इसलिये चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" (मत्ती 5:48)। "जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो" (लूका 6:36)। पतरस ने यूं कहा था : "पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन

में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, 'पवित्र बनों क्योंकि मैं पवित्र हूं' " (1 पतरस 1:15-16)। मसीह स्वयं हमारे लिये सबसे बड़ा आदर्श है (फिलिप्पियों 2:5; 1 पतरस 2:21-24; 1 कुरिन्थियों 11:1)। सो क्योंकि स्वयं परमेश्वर ही हमारा आदर्श है, तो फिर इससे बड़े और किसी आदर्श की आवश्यकता हमें नहीं होनी चाहिए। यद्यपि हम कभी भी परमेश्वर के समान तो पवित्र नहीं बन सकते पर यदि हम अपने जीवन का आदर्श उसे बनाकर चलेंगे तो हमारे जीवन पृथ्वी पर सबसे उत्तम जीवन होंगे।

बाइबल के नए नियम में कई बार "योग्य" शब्द का उपयोग हुआ है। कई स्थानों पर शिक्षा देकर कहा गया है, कि हमारा जीवन उसके या इसके "योग्य" हो। जैसे कि लिखा है, "कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो" (फिलिप्पियों 1:27)। फिर, "तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो" (1 थिस्सलुनीकियों 2:12)। और, "तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो" (कुलुस्सियों 1:10)। पौलुस ने लिखकर यूं कहा था, "कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे उसके योग्य चाल चलो।" (इफिसियों 4:1)। क्या है हमारी बुलाहट? "परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं; परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है।" (1 थिस्सलुनीकियों 4:7; 1 तीमुथियुस 4:9; इफिसियों 1:4)। उसने हमें "अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है।" (1पतरस 2:9)। परमेश्वर हमें अपनी "संतान" कहकर सम्बोधित करता है। (1 यूहन्ना 3:1)। उसने हमें पवित्र होने के लिये बुलाया है। (रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:2) प्रत्येक मसीही व्यक्ति एक ऐसा मनुष्य है जिसे मसीह यीशु के लहू के द्वारा बपतिस्मा लेते समय पवित्र ठहराया गया है (1 कुरिन्थियों 6:11; इफिसियों 5:25-27)। सो जबकि परमेश्वर ने एक मसीही जन को पवित्र माना है, इसलिये एक मसीही का चाल-चलन अवश्य ही पवित्र होना चाहिए।

प्रेम मसीहीयत की पहचान है (1 कुरिन्थियों 13:1-3,13)।

पौलुस ने कहा था: "आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्ज़दार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।" (रोमियों 13:8) "क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, कि 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख," (गलतियों 5:14; याकूब 2:8; मत्ती 22:36-40)। पौलुस ने एक ऐसे व्यक्ति का जो वास्तव में प्रेम रखता है बड़ा ही अच्छा विवरण किया है। (1 कुरिन्थियों 13:4-7)। यीशु मसीह स्वयं प्रेम के लिये हमारा आदर्श है (इफिसियों 5:2, 25; 1 यूहन्ना 3:23)। हमें यह शिक्षा मिली है कि हमे वैसे ही प्रेम रखना चाहिए जैसे उसने हमसे रखा है। (यूहन्ना 13:34; 15:9-12)। मसीही जीवन में प्रेम का स्थान बड़ा ही विशेष है, और इसीलिये एक मसीही में प्रेम प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। (मत्ती 12:33-35; 15:18-19; 23:25-26; लूका 6:43-44)। एक मसीही के लिये आवश्यक है कि वोह अपना मन और चाल-चलन प्रेमपूर्वक बनाए। (रोमियों 12:1-2; भजन 51:10; 119:36; 2 कुरिन्थियों 10:5; इफिसियों 4:22-23)। यदि हमारे भीतर के व्यक्तित्व में प्रेम होगा, तो वोह अवश्य ही बाहर निकलकर आएगा। एक मसीही के लिये यह अति अवश्यक है कि वोह अन्दर और बाहर दोनों तरफ से अपने आपको शुद्ध रखे।

प्रेम के अलावा एक मसीही को चाहिए कि वोह अपने जीवन में अन्य अच्छी बातों को भी विशेष जगह दे। अर्थात् उसके जीवन में नम्रता, संयंम, धीरज, भलाई, परमेश्वर-भक्ति, दया और क्षमा भरपूर हों (इफिसियों 4:32)। निम्नलिखित, बाइबल के, हवालों में कुछ विशेष बातों का वर्णन किया गया है जिन्हें हमें अपने जीवनों में खास जगह देने की ज़रूरत है: मत्ती 5:3-9; गलतियों 5:22-23; कुलुस्सियों 3:12-17; 1 तीमुथियुस 6:11; याकूब 3:13, 17-18; 2 पतरस 1:5-7, ऐसे ही कुछ ऐसी बुरी बातें भी हैं जिनका वर्णन हमें निम्नलिखित बाइबल के पदों में मिलता है, जिन्हें हमें अपने

जीवनों से दूर रखना चाहिए: रोमियों 1:29-31; 1 कुरिन्थियों 6:9-10; गलतियों 5:19-21; कुलुस्सियों 3:5-10; 1 तीमुथियुस 1:9-11; 2 तीमुथियुस 3:2-5; याकूब 3:14-16; 1 पतरस 2:1-2.

बाइबल के नए नियम में मसीही जीवन के बारे में हमें बहुतायत से मिलता है। सबसे पहले नए नियम में हमें मसीहीयत के आधार के बारे में बताया गया है। और उसके बाद बड़े ही स्पष्ट रूप में मसीही व्यवहार के बारे में बताया गया है। (तीतुस 2:1); निम्नलिखित हवालों से पढ़कर देखा जा सकता है कि कितने विस्तार से मसीही जीवन के अलग-अलग पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। बाइबल में दर्शाया गया है कि एक मसीही का पारिवारिक, सामाजिक और व्यापारिक जीवन कैसा होना चाहिए और व्यक्तिगत और नैतिक दृष्टिकोण से एक मसीही को कैसे जीवन निर्वाह करना चाहिए। (मत्ती 5:1-7:28; 18:1-35; रोमियों 12:1-14; इफिसियों 4:17-6:20; कुलुस्सियों 3:1-4:6; 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-12; तीतुस 2:1-11; इब्रानियों 12:1-13:19; याकूब 1:2-5:20; 1 पतरस 2:11-5:11)। एक मसीही को परमेश्वर का भक्त बनना चाहिए। (1 तीमुथियुस 4:7) पौलुस ने तीमुथियुस को लिखकर कहा था कि "धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर" (1 तीमुथियुस 6:11)।

कलीसिया

कलीसिया एक यूनानी शब्द है जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी में "चर्च" कहकर किया गया है। कलीसिया का अर्थ वास्तव में "एक मंडली" या "एक जन-सभा" है। किन्तु कलीसिया का अर्थ घर या स्थान बिल्कुल नहीं है। कलीसिया के बारे में बाइबल में लिखा है, कि कलीसिया उन लोगों की एक मंडली है जिन्होंने यीशु मसीह में विश्वास लाकर अपना मन फिराया है और उद्धार पाने के लिये उसकी आज्ञा को माना है, अर्थात कलीसिया उद्धार या मुक्ति पाए हुए परमेश्वर के लोगों की एक मंडली है। एक स्थान पर जमा होने के लिये कलीसिया को एक घर या जगह की ज़रूरत हो सकती है, पर घर या जगह किसी भी रूप में वास्तव में कलीसिया नहीं है। किसी जगह, स्थान, घर या भवन को कलीसिया कहकर सम्बोधित करना इसलिये बिल्कुल गलत बात है।

"कलीसिया" को एक बड़े विश्वव्यापी रूप में भी देखा जा सकता है अर्थात, एक ऐसा समूह जिसमें संसार में के सभी मसीही शामिल हैं। जब प्रभु यीशु ने कहा था कि "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा," (मत्ती 16:18), तो यीशु के कहने का यही अभिप्राय था। परन्तु किसी भी स्थान पर जब मसीही लोग एकत्रित होते हैं तो उसे भी कलीसिया माना जाता है। (1 कुरिन्थियों 1:2)। परमेश्वर की आराधना करने के लिये जमा हुए मसीही लोगों की मंडली एक कलीसिया है। (1कुरिन्थियों 11:18; 14:19)। कलीसिया केवल एक ही है। परन्तु अलग-अलग देशों में, और शहरों और स्थानों पर उस एक कलीसिया की अनेक मंडलियां पाई जा सकती हैं। उन

मंडलियों को उन स्थानों या शहरों के नामों से भी सम्बोधित करके पुकारा जा सकता है। जैसे कि हम बाइबल में पढ़ते हैं, "यरूशलेम की कलीसिया" या "कलीसिया जो कुरिन्थुस में है।" (प्रेरितों, 8:1; 11:22; रोमियों 16:1; 1 कुरिन्थियों 1:2; 2 कुरिन्थियों 1:1; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)। फिर, जैसे, "गलतिया की कलीसिया (गलतियों 1:2; 1:22; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14; 1 कुरिन्थियों 16:1, 19; प्रकाशित. 1:4)। अर्थात, कलीसिया क्योंकि केवल एक ही है, इसलिये उस एक कलीसिया की मंडली को बिना कोई साम्प्रदायिक नाम दिये आसानी से कहीं पर भी पहचाना जा सकता है, जैसे कि यह कहकर कि कलीसिया जो किसी मसीही के घर में मिलती है। (रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19; फिलेमोन 2)।

एक और बड़ी ही ख़ास बात बाइबल से हमें यह सीखने को मिलती है, कि जहां कहीं भी कलीसिया के बारे में लिखा या कहा गया है तो उसका वर्णन ऐसे शब्दों के द्वारा किया गया है जिनसे परमेश्वर और मसीह का नाम ऊंचा हो, अर्थात महिमा कलीसिया के द्वारा परमेश्वर और मसीह को ही मिले, न कि किसी मनुष्य को। (1 कुरिन्थियों 1:10-17) बाइबल में कलीसिया को ऐसे नामों से कभी भी और कहीं भी नहीं सम्बोधित किया गया है जैसे कि आज के समय में किया जाता है, जैसे कि "सेंट पॉल चर्च," "सेंट पीटर चर्च" या "सेंट मैरी चर्च" और "सेंट जॉन चर्च" इत्यादि।

बाइबल में कलीसिया को कहा गया है "परमेश्वर का घराना" (1 तीमुथियुस 3:15), "परमेश्वर की कलीसिया" (1 कुरिन्थियों 1:2; 10:32; 11:16, 22; 15:9; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलतियों 1:13; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14; 2 थिस्सलुनीकियों 1:4; 1 तीमुथियुस 3:5; प्रेरितों 20:28), "जीवते परमेश्वर की कलीसिया" (1 तीमुथियुस 3:15) "मसीह की कलीसियाएं" (रोमियों 16:16) या, कलीसिया

जो "परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है।" (1 थिस्सलुनीकियों 1:1)। बाइबल में कहीं पर भी कलीसिया को किसी मनुष्य के नाम से या किसी शिक्षा के नाम से, जैसे "बैप्टिस्ट" "मेथोडिस्ट" "पेन्टेकोस्टल" "सैवेन्थ डे" या "सनीचर मिशन" आदि नामों से नहीं सम्बोधित किया गया है। कलीसिया केवल मसीह और परमेश्वर की है, इसलिये उस पर उन्हीं का अधिकार है।

बाइबल में कुछ ऐसे विशेष शब्दों को भी उपयोग में लाया गया है, जिनके द्वारा कलीसिया के स्वभाव पर प्रकाश डाला गया है। जैसे कि कलीसिया को एक घर कहा गया है (1 कुरिन्थियों 3:9; इब्रानियों 3:6; 1 तीमुथियुस 3:15) कलीसिया "परमेश्वर का मन्दिर" है, क्योंकि परमेश्वर व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से अपने लोगों के भीतर रहता है। (1कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19-20)। परमेश्वर का यह मन्दिर पृथ्वी पर के ईंट और पत्थरों से नहीं; पर उसके लोगों से, जिन्हें बाइबल में "जीवते पत्थर" कहकर सम्बोधित किया गया है, बना हुआ है। (1पतरस 2:5)। ऐसे ही, कलीसिया को "मसीह की देह" और मसीह को कलीसिया का "सिर" कहकर सम्बोधित किया गया है। (इफिसियों 1:22-23; 4:4, 15-16; कुलुस्सियों 1:18, 24)। कलीसिया एक ऐसी देह है जिसके भीतर सारे लोग अलग-अलग अंगों के समान हैं, और जिस प्रकार एक मनुष्य की देह में बहुत से अंग होते हैं जो अलग-अलग काम करते हैं, वैसे ही कलीसिया में सब लोग हैं जो भिन्न-भिन्न कार्य कर सकते हैं। (रोमियों 12:4-8; 1 कुरिन्थियों 12:14-26)। और जिस प्रकार से मनुष्य की एक देह के भीतर सभी अंग रहते हैं, वैसे ही कलीसिया अर्थात मसीह की देह में भी है, यानी संगति में रहकर सदस्य आपस में एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। (मत्ती 12:49-50; इफिसियों 2:19; 2 कुरिन्थियों 6:18; 1 तीमुथियुस 5:1-2)। मसीह की कलीसिया में उसके लोग आपस में दुख और सुख बांटते हैं (रोमियों 12:15; 1 कुरिन्थियों 12:26; गलतियों 6:2,10)। कलीसिया

कई प्रकार से एक "संगति" के समान है। (प्रेरितों 2:42; 1 कुरिन्थियों 1:9; गलतियों 2:9; इफिसियों 3:9; फिलिप्पियों 3:10; 1 यूहन्ना 1:3,6-7)। कलीसिया को बाइबल में, मसीह की दुल्हन के रूप में भी दर्शाया गया है, जिसका अभिप्राय इस बात से है कि जो लोग उसकी कलीसिया में हैं वे एक पवित्र जीवन निर्वाह करें। (इफिसियों 5:22-32; 2 कुरिन्थियों 11:2)। प्रेरित पतरस ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में कलीसिया का चित्रण इन शब्दों में किया था, 1 पतरस 2:9-10:

> "तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो। तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी, पर अब तुम पर दया हुई है।"

कलीसिया का संगठन बड़ा ही साधारण है। मसीह का दर्जा कलीसिया में सबसे बड़ा है, वोह प्रमुख या मुखिया है। इस बात को अनेक ढंग से बाइबल में समझाया गया है। मसीह को "प्रधान रखवाला" (1 पतरस 5:4), "सिर" (इफिसियों 1:22,23; 4:4; 15-16; कुलुस्सियों 1:18,24), "कोने का पत्थर" (इफिसियों 2:20), और "नींव" कहकर सम्बोधित किया गया है। (1 कुरिन्थियों 3:11)। अलग-अलग स्थानों पर मसीह की कलीसियाओं में, प्रत्येक कलीसिया में, जो लोग कलीसिया की अगुवाई करते थे, उन्हें हर एक कलीसिया में बाइबल में वर्णित कुछ विशेष योग्यताओं के आधार पर चुनकर नियुक्त किया जाता था, और वे प्राचीन, बुजुर्ग, रखवाले, अगुवे बिशप या पास्टर कहलाते थे। (1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9; 1 पतरस 5:1-4, फिलिप्पियों 1:1; प्रेरितों 20:28; इफिसियों 4:11; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; इब्रानियों 13:17)। प्रत्येक मंडली में कम-से-कम दो या इससे भी अधिक अगुवे होते थे

और वे उसी कलीसिया की अगुवाई करते थे। जिसके वे स्वयं सदस्य थे बहुत सारी कलीसियाओं के ऊपर एक अगुवा या एक बिशप नहीं होता था। प्रत्येक मंडली में अगुओं की सहायता करने के लिये सेवकों को भी चुनकर नियुक्त किया जाता था। (1तीमुथियुस 3:8-13; फिलिप्पियों 1:1)। क्योंकि प्रत्येक कलीसिया मसीह के अधीन रहकर उसके वचन की अगुवाई में एक ही शिक्षा पर अमल करती है, इसलिये वे सब मंडलियां एकता के सूत्र में बंधी रहती हैं। (यूहन्ना 13:34; 17:20,21; रोमियों 12:16; 15:5; 1 कुरिन्थियों 1:10; 3:3; 2 कुरिन्थियों 13:11; इफिसियों 4:3; फिलिप्पियों 2:2)।

अब, मसीह की कलीसिया का सदस्य या मेम्बर कोई कैसे बनता है? बाइबल के अनुसार, जो व्यक्ति मसीह में विश्वास लाकर अपना मन सभी अन्य बातों से और प्रत्येक बुरे काम से फिरा लेता है, और फिर उसकी आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेता है, उसे मसीह स्वयं अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (गलतियों 3:27; रोमियों 6:3; प्रेरितों 2:38,41,47)। जब कोई व्यक्ति प्रभु की आज्ञा मानकर एक मसीही और मसीह की कलीसिया का सदस्य बन जाता है तो उसे अन्य सभी मसीही लोगों की संगति की आवश्यकता होती है। (इब्रानियों 3:13; 10:24-25)। मसीही जीवन में आगे बढ़ने के लिये अन्य मसीही जनों की संगति की आवश्यकता होती है, इसी कारण से मसीह ने कलीसिया को बनाया है।

कलीसिया के सम्बन्ध में पाई जानेवाली कुछ गलत धारणाओं पर भी विचार करना ज़रूरी है। मसीह ने जब अपनी कलीसिया की स्थापना की थी तो प्रेरित पतरस को प्रभु ने विशेष रूप से इस्तेमाल किया था, अर्थात उसने सबसे पहली बार मसीह के सुसमाचार को लोगों को सुनाया था, पर उसे कलीसिया का मुखिया या सिर नहीं ठहराया गया था। (प्रेरितों 2:14-47; 10:1-48)।

पतरस ने नए नियम की दो पत्रियों को लिखा था, और पहली शताब्दी में वोह एक कलीसिया में प्राचीन भी था (1 पतरस 5:1; यूहन्ना 21:15-17)। परन्तु वोह प्रभु के सभी अन्य प्रेरितों के समान ही था, यदि कोई विशेष अधिकार उसे दिए गए थे, (मत्ती 16:17-19), तो वही अधिकार अन्य सभी प्रेरितों को भी दिए गए थे। (मत्ती 18:1,18; यूहन्ना 20:23)। पतरस तथा अन्य प्रेरित कलीसिया के बुनियादी सदस्य थे, क्योंकि सबसे पहले उन्होंने ही मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया था, और वे सब प्रेरित मसीह के पुनरुत्थान के भी गवाह थे। (इफिसियों 2:20; 1 कुरिन्थियों 12:28; प्रकाशित 21:14)। परन्तु कलीसिया की बुनियाद या नींव में स्वयं यीशु मसीह का एक बड़ा ही अहम किरदार था क्योंकि वोह उस नींव में कोने के सिरे का पत्थर था, अर्थात वही कलीसिया का आधार था। (इफिसियों 2:20; 1 पतरस 2:6-8)। पौलुस ने लिखा था: "क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वोह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।" (1 कुरिन्थियों 3:11)। बाइबल में कहीं पर भी ऐसा नहीं लिखा हुआ है कि पतरस "पोप" था और सारी कलीसिया उसके कहने पर चलती थी, और न ही पतरस का कभी कोई उत्तराधिकारी था। एक बार जब एक व्यक्ति ने पतरस के सामने झुककर उसे प्रणाम करने की कोशिश की थी, तो पतरस ने उसे ऐसा करने से यह कहकर मना किया था कि "मैं भी तो मनुष्य हूं।" (प्रेरितों 10:25-26)। और जब पतरस ने गलती की थी, तो एक अन्य प्रेरित ने उसे डांट भी लगाई थी। (गलतियों 2:11-14)। पतरस के पास तो यह भी अधिकार नहीं था, कि कलीसिया में खड़ी हुई किसी समस्या का समाधान वोह स्वयं कर ले। (प्रेरितों 15:1-30)। इसलिये, जो लोग आज पतरस को कुछ खास महत्व देकर उसे कलीसिया में सबसे बड़ा मानते हैं, और कुछ लोगों को पतरस का उत्तराधिकारी मानकर उन्हें वोह दर्जा देते हैं, जो वास्तव में कलीसिया में केवल मसीह

का है, तो वे लोग हकीकत में मसीह का निरादर करते हैं।

बाइबल की शिक्षानुसार, कलीसिया में सभी मसीही याजक अर्थात प्रीस्ट हैं। (1 पतरस 2:9; प्रकाशित. 1:6;5:10)। इसलिये हर एक मसीही प्रार्थना के द्वारा स्वयं परमेश्वर पिता के पास आ सकता है। (इब्रानियों 10:19-22; रोमियों 5:1-2; इफिसियों 2:18; 3:12; 1 यूहन्ना 2:1-2)। क्योंकि यीशु मसीह स्वयं हमारा मध्यस्थ और महायाजक है। (1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 2:14-18; 4:14-5:10; 7:1-10:39)। आज हमें, किसी भी मसीही जन को, परमेश्वर के पास आने के लिये या अपनी प्रार्थना को परमेश्वर तक पहुंचाने के लिये किसी प्रीस्ट की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि प्रत्येक मसीही स्वयं एक याजक अथवा प्रीस्ट है। एक मसीही जन को अपने पाप स्वीकार करने के लिये किसी विशेष प्रीस्ट के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। मसीही लोग आपस में एक-दूसरे के सामने अपने पाप स्वीकार कर सकते हैं, और विशेषकर स्वयं परमेश्वर से प्रार्थना करके अपने पापों की क्षमा मांग सकते हैं। (याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9)। पर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये किसी भी मनुष्य को किसी दूसरे मनुष्य के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि इस पृथ्वी पर एक भी इनसान ऐसा नहीं है जिस ने कभी कोई पाप न किया हो। केवल परमेश्वर ही है जो मनुष्यों के पाप क्षमा कर सकता है। उसने हम सबको अपना वचन दिया है बाइबल में लिखवाकर और हमें बताया है कि हम सब अपने-अपने पापों की क्षमा कैसे प्राप्त कर सकते हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम लोगों को परमेश्वर के वचन से शिक्षा दें। (प्रेरितों 13:38-39; मत्ती 18:5, 6,18; 23:13; लूका 11:52)। मनुष्यों के पास नहीं, पर हम सबको परमेश्वर के पास आने की आवश्यकता है।

इसी सम्बन्ध में यहां एक और बात की चर्चा की जा सकती है, और इसका सम्बन्ध मरियम अर्थात यीशु की माता से है। मरियम

एक अच्छी यहूदी स्त्री थी, और इसीलिये उसे परमेश्वर ने अन्य सभी स्त्रियों में से चुना भी था ताकि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का जन्म पृथ्वी पर हो (लूका 1:39-43), किन्तु इसके अतिरिक्त, बाइबल में मरियम के जीवन के बारे में बहुत ही कम लिखा गया है। यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले मरियम को यूहन्ना नाम के अपने चेले को सौंपा था ताकि वोह उसकी देख-भाल करे (यूहन्ना 19:25-27)। वोह स्वयं भी यीशु में, यीशु के भाइयों की तरह ही, विश्वास करती थी। (प्रेरितों 1:14)। बाइबल में एक भी जगह नहीं मिलता कि कभी किसी ने मरियम से प्रार्थना की हो। उसके पास किसी प्रकार की कोई अद्‌भुत शक्ति नहीं थी। यीशु के जन्म के बाद वोह कुंवारी नहीं रही थी। (मत्ती 1:24-25; 13:54-56; मरकुस 6:3; लूका 2:7)। उसके जीवन से हमें यह सीखने को मिलता है, कि उसने परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये अपने आप को नम्रतापूर्वक परमेश्वर को सौंपा था, और वोह मसीह में विश्वास करती थी।(लूका 1:38)। परन्तु वोह एक मनुष्य मात्र ही थी। न तो मरियम यीशु की तरह, हमारी बिचवई है और न ही उद्धारकर्ता, इसलिये मनुष्य को मरियम से प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। जो लोग मरियम से प्रार्थना करते हैं और यीशु से भी अधिक उसका आदर करते हैं वे वास्तव में यीशु के प्रभुत्व का तिरस्कार करते हैं, क्योंकि उस आदर, सम्मान और भक्ति का हक़दार वास्तव में स्वयं प्रभु यीशु मसीह है, मरियम नहीं। (कुलुस्सियों 1:15-20; रोमियों 8:34; 1 तीमुथियुस 2:5; 1 यूहन्ना 2:1-2)।

सेवा तथा सुसमाचार-प्रचार

कलीसिया क्योंकि मसीह की देह है, इसलिये कलीसिया का कर्त्तव्य है कि वोह उस काम को करे और उसे आगे बढ़ाए जिस काम को करने के लिये मसीह पृथ्वी पर आया था। मसीही लोग याजकों का समाज हैं और इसलिये उन्हें परमेश्वर के कामों में लगे रहना चाहिए। (इब्रानियों 9:14; 1 पतरस 2:5,9)। जबकि कलीसियाओं में भिन्न-भिन्न स्थानों पर कुछ के पास अगुवाई, सेवकाई, और शिक्षा देने की ज़िम्मेदारी है, किन्तु सभी अन्य मसीही लोगों को भी प्रभु के कार्यों में लगे रहना चाहिए। (इफिसियों 4:11-13; मत्ती 20:26-28; 25:44-45; रोमियों 16:1-2)। हमारा काम परमेश्वर और मानवता की सेवा करना है। इसी बात पर अब हम विचार करेंगे।

कलीसिया का कर्त्तव्य पहले तो स्वयं कलीसिया के ही प्रति है, और फिर संसार के सभी लोगों के प्रति है। सर्व-प्रथम कलीसिया को अपने ही सदस्यों के प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता है, उन्हें आत्मिक रूप से बढ़ाएं और मज़बूत बनाएं (इफिसियों 4:11-13; कुलुस्सियों 1:28)। जो कलीसिया में शिक्षक और प्रचारक हैं उन्हें चाहिये कि वे सच्ची और खरी शिक्षा के द्वारा कलीसिया को आत्मिक रूप से मज़बूत बनाएं। (इफिसियों 4:11; 1 तीमुथियुस 4:11-16; 2 तीमुथियुस 2:2; 3:10-4:5)। अन्य लोगों को चाहिए कि वे आपस में एक-दूसरे की सहायता करें। (प्रेरितों 11:29; गलतियों 6:10; 2 कुरिन्थियों 8:1-9:15; 1 यूहन्ना 3:17-18)। एक दूसरे की सहायता करके हम मसीह के आदर्श पर चलने की

कोशिश करते हैं। (मत्ती 20:28; फिलिप्पियों 2: 7-8)। आपस में संगति रखने के द्वारा मसीही लोग एक-दूसरे के करीब आते हैं और एक-दूसरे को प्रोत्साहन देते हैं। एक परिवार की ही तरह कलीसिया में कभी-कभार ऐसा भी होता है कि किसी गलत चाल चलनेवाले सदस्य को मन फिराकर सही मार्ग पर लाने के लिये उसे समझाना पड़ता है और ताड़ना भी देनी पड़ती है। (1 तीमुथियुस 1:20; 1 कुरिन्थियों 5:1-13; मत्ती 18:15-17; 2 यूहन्ना 10-11; 2 थिस्सलुनीकियों 3:14-15; तीतुस 3:10-11)।

दूसरे स्थान पर, कलीसिया का कर्त्तव्य संसार के लोगों के प्रति भी है। मसीही लोग संसार में तो रहते हैं, पर उन्हें संसार के अन्य लोगों की तरह नहीं बनना चाहिए। (यूहन्ना 8:23; 15:19; 17:15-18)। जैसे कि एक किश्ती को हम देखते हैं, कि वोह पानी के ऊपर तैरती रहती है, पर यदि पानी उसके भीतर भर जाए तो वोह डूब जाएगी। मसीही लोगों को संसार के बुरे कामों में शामिल नहीं होना चाहिए। (2 कुरिन्थियों 6:14-17)। हमारे काम ऐसे होने चाहिए कि उन्हें देखकर लोग परमेश्वर की महिमा करें, और हमारे जीवन को देखकर लोग वैसा ही जीवन व्यतीत करने की चेष्टा करें। (मत्ती 5:13-16; 1 पतरस 2:12; 3:15-16; फिलिप्पियों 2:15)। मसीही लोग इस संसार में पाप और बुराई से लड़ने के लिये परमेश्वर की सेना के समान हैं। (2 कुरिन्थियों 10:3-5; इफिसियों 6:10-17)। हम लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, बुरी बातें नहीं बोलते, परन्तु प्रेम से सबको समझाते हैं, ताकि सबको मसीह के सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर के पास ला सकें। (मत्ती 28:19-20; 1 कुरिन्थियों 9:16)। जैसे कि प्रेरित पौलुस ने कहा था, कि परमेश्वर ने: "मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है... इसलिये हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है। हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो।" (2 कुरिन्थियों 5:18-20)।

मसीह में विश्वास नहीं रखनेवाले लोग अकसर कलीसिया में त्रुटियों को देखने की कोशिश करते रहते हैं। पर हमें याद रखना चाहिए, कि कलीसिया मनुष्यों से मिलकर बनी हुई है, और मनुष्यों में कोई भी सिद्ध नहीं है, इसलिए कलीसिया भी सिद्ध नहीं है। मसीही लोग यह जानते हैं कि उनमें से कोई भी सिद्ध नहीं है, पर वे यह भी जानते हैं कि यीशु मसीह सिद्ध है। वास्तव में मसीहीयत का आंकलन मसीह से करके देखना चाहिए। यदि यह कहा भी जाए कि मसीही लोगों ने गलतियाँ की हैं, तौभी अगर उन सब अच्छे कामों से उनकी तुलना करके देखा जाए जो कलीसिया के द्वारा वर्षों से समाज में किए गए हैं, तो वे भलाई के सभी अच्छे काम उन सब गलतियों से बहुत अधिक पाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त, वे सब बुराइयां जिनका श्रेय कलीसिया पर मढ़ा जाता है, वास्तव में मसीहीयत के नाम में उन लोगों द्वारा की गई थीं जो हकीकत में न तो मसीही हैं और न ही मसीह की कलीसिया से उनका कोई सम्बन्ध है। उस झूठी कलीसिया के लोगों ने मसीहीयत के नाम में वे सब गलत काम किये थे। परन्तु यीशु मसीह की सच्ची कलीसिया ने सदा से ही भलाई के अच्छे-अच्छे काम किये हैं। मसीह की कलीसिया में वे लोग हैं जो संसार के हर एक बुरे काम से अपना मन फिराकर उसमें शामिल हुए हैं। यद्यपि थोड़ी-बहुत गलतियां प्रत्येक मसीही में और हर एक मंडली में देखी जा सकती है, जिसमें सुधार लाने की आवश्यकता है, फिर भी कलीसिया उस नगर की तरह हैं जो एक पहाड़ पर बसा हुआ है जिस पर चमकनेवाली ज्योति पृथ्वी पर सब मनुष्यों को स्वर्ग का मार्ग बता रही है। (मत्ती 5:14-16)।

उपासना

कलीसिया का कर्त्तव्य न केवल स्वयं अपने और संसार के प्रति ही है, परन्तु उपासना के द्वारा परमेश्वर के प्रति भी है। उपासना का अर्थ क्या है? जो कुछ भी हम परमेश्वर की सेवा में प्रति-दिन करते हैं वोह उसकी सेवा है (रोमियों 12:1,2)। अर्थात, हमारा सम्पूर्ण जीवन ही परमेश्वर की उपासना और सेवा में लौलीन रहना चाहिए। (कुलुस्सियों 3:17)। केवल एक या दो घन्टे प्रत्येक सप्ताह में परमेश्वर की आराधना में देकर ही हमें सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। परन्तु हर एक दिन और सदा जो कुछ भी हम करें वोह परमेश्वर की महिमा के लिये ही करें परन्तु, फिर भी, बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग सप्ताह में एक दिन एक स्थान पर एकत्रित होकर, कलीसिया के रूप में उसकी आराधना करें। उपासना करने का अर्थ है, "आदर, सम्मान, स्तुति और भक्ति करना।" सर्वशक्तिमान तथा सच्चे परमेश्वर की महिमा करना, उसके गुणगान करना। (मत्ती 2:2, 8,11; 4:9,10; यूहन्ना 4:23-24; 1 कुरिन्थियों 14:25; प्रकाशित, 4:10; 5:14)। परमेश्वर की आराधना करके हम उसे महिमान्वित करते हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सिंहासन के सामने आकर उसकी उपासना करना महान बात है। (प्रकाशित. 4:1-5:14; यशायाह 6:1-5; 56:7; मत्ती 21:13)। किन्तु ऐसा नहीं समझ लेना चाहिए कि परमेश्वर एक स्वार्थी मनुष्य के समान है, जो हम मनुष्यों से अपनी प्रशंसा करवाना चाहता है। (प्रेरितों 17:24-25; भजन 50:10-12)। वास्तव में परमेश्वर की आराधना करना स्वयं हमारे लिये ही भला है, क्योंकि

उपासना के द्वारा हम परमेश्वर के समीप आते हैं। वोह हमारा सृष्टिकर्त्ता और आत्मिक पिता है, और यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसका आदर, सम्मान और उसकी प्रशंसा करें। उसे हमारी आवश्यकता नहीं है, परन्तु हमें उसकी आवश्यकता है।

परमेश्वर क्योंकि सर्वव्यापी है, इसलिये उसकी आराधना कहीं भी की जा सकती है। परमेश्वर की आराधना करने के लिये किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं है। (यूहन्ना 4:19-24)। आराधना किसी के घर में की जा सकती है, या किसी खुले स्थान पर या किसी भवन में की जा सकती है। (रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15; प्रेरितों 2:46; 5:42; 16:13; 20:7-8)। मसीही आराधना के लिये किसी भी प्रकार के ऊपरी दिखावे की आवश्यकता नहीं होती, पर उपासना इनसान के भीतर से होनी चाहिए। एक पवित्र जीवन और सच्चे मन से की गई उपासना से परमेश्वर प्रसन्न होता है। (भजन 15:1-5; 24:3-4 मत्ती 5:8)। परमेश्वर आत्मा है, और इसलिये उसकी उपासना भी आत्मा से की जानी चाहिए। जैसे कि यीशु ने कहा था, कि, "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।"(यूहन्ना 4:24)। यदि आप मसीही हैं, और आपके आस-पास मसीह की कलीसिया कहीं पर भी नहीं है, तो आप स्वयं अपने ही घर में परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं। अपने परिवार के लोगों को और अपने मित्रों को प्रभु का सुसमाचार सुनाएं ताकि वे भी प्रभु में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा मानकर मसीही बनें ताकि मसीह की कलीसिया वहाँ पर जहाँ आप है, स्थापित हो सके।

आरम्भ में मसीही लोग आराधना करने के लिये सप्ताह के पहले दिन, अर्थात, रविवार के दिन आराधना करने के लिये एकत्रित होते थे। (प्रेरितों 20:5-7; 1 कुरिन्थियों 16:1-2)। यहूदी लोग सप्ताह के सातवें दिन अर्थात शनिवार के दिन आराधना करते थे।

परन्तु मसीही लोग सप्ताह के पहले दिन इसलिये आराधना करते हैं क्योंकि यीशु मसीह सप्ताह के पहले दिन, अर्थात रविवार के दिन मुर्दों मे से जी उठा था, और इस कारण से रविवार का दिन प्रभु का दिन कहलाने लगा था। (प्रकाशित. 1:10; मत्ती 28:1; मरकुस 16:1,2)। किन्तु जबकि मसीही लोग रविवार के दिन परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक निश्चित स्थान पर एकत्रित होते हैं, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे सप्ताह के किसी अन्य दिन में परमेश्वर के वचन में से अध्ययन करने के लिये और प्रार्थना करने के लिये और भजन गाने के लिये इकट्ठा नहीं हो सकते। (मत्ती 6:6)। कई स्थानों पर ऐसा होता है जहाँ मसीही लोग आपस में संगति करने के लिये और परमेश्वर की स्तुति करने के लिये किसी भी दिन, किसी मसीही जन के घर में या किसी अन्य स्थान पर एकत्रित होते हैं। (प्रेरितों 2:46; 5:42)। इस प्रकार से इकट्ठे होकर परमेश्वर की स्तुति करना बड़ी ही अच्छी बात है। पर मसीही लोगों के लिये सप्ताह के पहले दिन परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक निश्चित स्थान पर एकत्रित होकर उपासना करना परमेश्वर की आज्ञा है। (इब्रानियों 10:25)। इस प्रकार एकत्रित होकर मसीही लोग न केवल परमेश्वर की आराधना ही करते हैं, पर आपसी संगति और प्रोत्साह का भी अनुभव करते हैं।

मसीही लोग आराधना के लिये एकत्रित होकर परमेश्वर को सम्मानित और महिमान्वित करते हैं; उसके प्रति अपने धन्यवाद प्रकट करते हैं। और इसी के साथ एक-दूसरे को मसीही जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित भी करते हैं। (1 तीमुथियुस 4:13; 1 कुरिन्थियों 14:19,26)। मसीही लोग आराधना में गीत गाते हैं। कुछ गीत ऐसे होते हैं जिन्हें परमेश्वर की प्रशंसा में गाया जाता है, और कुछ एक-दूसरे के आत्मिक-उत्थान के लिये गाए जाते हैं। (इफिसियों 5:19-20; कुलुस्सियों 3:16; प्रेरितों 16:25; 1 कुरिन्थियों 14:15)। ऐसे ही, परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल में से

पढ़ा और समझा जाता है। (प्रकाशित: 1:3; 1 तीमुथियुस 4:13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:27)। बाइबल में से पढ़कर उपदेश दिया जाता है, और बताया जाता है कि हमसे परमेश्वर क्या चाहता है। (1 तीमुथियुस 4:13-16; 5:17; 2 तीमुथियुस 2:1-2; 3:10,16; प्रेरितों 20:20-21 याकूब 3:1)। इस प्रकार से बार-बार एकत्रित होने से मसीही लोगों को आत्मिक बल मिलता है, और आत्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहन मिलता है। (रोमियों 12:3-8, 15; 16:16; 1 कुरिन्थियों 16:20; 1 यूहन्ना 1:3-4)।

कलीसिया की सभा में जो चंदा इकट्ठा किया जाता है उसे कलीसिया के काम के लिये इस्तेमाल किया जाता है, अर्थात आवश्यकता से पीड़ित किसी की सहायता के लिये या प्रचार के कार्य आदि के लिये। (रोमियों 12:13; 15:25-27; 1 कुरिन्थियों 9: 1-14; 2 कुरिन्थियों 8:1-9,15; इब्रानियों 13:1-3; 1 तीमुथियुस 5:3-18; याकूब 1:27)। मसीही लोग अपनी आमदनी में से प्रभु के कार्य के लिये सप्ताह के पहले दिन यानी रविवार के दिन बाइबल में लिखी आज्ञा के अनुसार अपना चंदा देते हैं। (1 कुरिन्थियों 16:2)। ऐसा करके वे अपनी एकता और संगीत का भी प्रदर्शन करते हैं। (2 कुरिन्थियों 8:4; 9:13; रोमियों 15:26; इब्रानियों 13:16)। यहूदी लोग अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा दिया करते थे। ऐसा करने को उनसे कहा गया था। लेकिन मसीही लोगों को बाइबल के नए नियम में सिखाया गया है, कि वे अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार अपनी इच्छा से दें। (1 कुरिन्थियों 16:1,2)।

मसीही आराधना में प्रार्थना करने का स्थान भी प्रमुख है। मसीही यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर है और वोह अपने लोगों की प्रार्थनाओं को सुनता है। परमेश्वर से जो कुछ भी हम माँगते हैं वोह सब हमें नहीं मिलता। किन्तु जो हमारे लिये उचित और आवश्यक है वोह हमें परमेश्वर देता है। (रोमियों 8:28)। हमें नियमित ढंग से परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। (1 थिस्सलुनीकियों

5:17; रोमियों 12:12; कुलुस्सियों 4:2; लूका 18:1)। किन्तु कुछ बातें ऐसी हैं जिनसे हमें दूर रहना चाहिए क्योंकि वे प्रार्थना में रुकावट बन सकती हैं, जैसे कि घर में कलेश-झगड़ा (1 पतरस 3:7), मन में किसी के प्रति बैर रखना (मत्ती 6:14,15; इफिसियों 4:32) गलत विचार तथा व्यवहार रखना (भजन. 66:18; यशायाह 1:15), किसी की बुराई करना (1 पतरस 3:12), और परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास न रखना (याकूब 1:6-8)। दूसरी ओर, कुछ बातें ऐसी हैं जो प्रार्थना में सहायक बन सकती हैं, जैसे कि एक अच्छा चरित्र (भजन. 24:3-4), प्रभु की आज्ञाओं पर चलना (1 यूहन्ना 3:21-22), परमेश्वर का आदर करना (मत्ती 6:9), विश्वास के साथ प्रार्थना करना (मत्ती 21:22; मरकुस 11:24), सच्चाई की प्रतीति करना (मत्ती 6:5,6; भजन. 17:1), और धन्यवादी बने रहना (कुलुस्सियों 4:2; फिलिप्पियों 4:6)। प्रभु यीशु स्वयं प्रार्थना के विषय में हमारे लिये एक अच्छा उदाहरण है (यूहन्ना 17:1-26; मत्ती 14:23; 26:36; लूका 5:16; 6:12; 9:28), प्रार्थना के बारे में यीशु ने अनेक बार सिखाया था (लूका 11:11; 5-13; 18:1-8), और प्रेरितों ने भी इस बारे में शिक्षा दी थी (1 थिस्सलुनिकियों 5:16-25; 1 तीमुथियुस 2:1-8; याकूब 5:13-18)। एक बार यीशु के चेलों ने प्रभु से आग्रह करके कहा था कि वोह उन्हें प्रार्थना करना सिखाए, और प्रभु ने उन्हें एक ऐसी उदाहरणात्मक प्रार्थना सिखाई थी जिसमें प्रार्थना करने की सभी विशेष आवश्यक बातें मौजूद थीं। प्रभु ने उनसे कहा था, तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो:

> हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो। हमारी दिन-भर की रोटी आज हमें दे। और जिस प्रकार हमने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न ला,

परन्तु बुराई से बचा। (मत्ती 6:9-13; लूका 11:1-4)।

हर एक सप्ताह के पहले दिन एकत्रित होकर मसीही जन प्रभु-भोज में भी भाग लेते हैं। प्रभु यीशु को स्मरण करने के लिये प्रभु-भोज लिया जाता है। प्रभु-भोज की स्थापना प्रभु ने अपनी मृत्यु से पहले की थी। (मत्ती 26:17-30; मरकुस 14:22-24; लूका 22:14-23; 1 कुरिन्थियों 11:23-26)। प्रभु ने कहा था: "मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" (1 कुरिन्थियों 11:24-25)। प्रभु-भोज में भाग लेने के द्वारा मसीही लोग यीशु की मृत्यु और जी उठने को याद करते हैं (1 कुरिन्थियों 11:24-26)। प्रभु-भोज का उद्देश्य भोजन करने से नहीं है (1 कुरिन्थियों 11:34)। प्रभु-भोज लेते समय मनुष्य को प्रभु के बलिदान के बारे में सोचना चाहिए, और अपने आप को जाँचना चाहिए (1 कुरिन्थियों 11:27-28)। यह वोह समय होता है जिसमें मसीहीगण प्रभु में अपनी एकता को व्यक्त करते हैं। (1कुरिन्थियों 10:16-17; 11:29-33)। प्रभु-भोज में रोटी में से खाकर मसीह की देह को स्मरण किया जाता है, और अंगूर के रस में से पीकर यीशु के लहू को याद किया जाता है। अख़मीरी रोटी अर्थात, जिसमें ख़मीर न हो, क्योंकि ख़मीर पाप का प्रतीक है, प्रभु-भोज में इस्तेमाल की जानी चाहिए। प्रभु यीशु में कोई पाप या कलंक नहीं था, वोह एक निष्कलंक मेमने की तरह हमारें पापों के बदले में बलिदान हुआ था, इसलिये अख़मीरी रोटी उसकी देह की याद में ली जाती है। (1 कुरिन्थियों 5:7; मरकुस 14:1) प्रभु-भोज लेने के द्वारा हम प्रभु में अपने विश्वास को दृढ़ करते हैं। (1 कुरिन्थियों 11:27-32)। इसी प्रकार से अंगूर का रस पीकर हम यीशु के लहू को स्मरण करते हैं, वोह लहू जो उसने हमारे पापों की छुड़ौती के लिये बहाया था। हर एक इतवार अर्थात प्रभु के दिन मसीही लोगों के लिये एकत्रित होकर प्रभु-भोज में भाग लेना बड़ा ही आवश्यक है। (1 कुरिन्थियों 10:16-17), क्योंकि प्रभु-भोज उन्हें याद दिलाता है कि उनके लिये एक बलिदान

दिया गया था और उनका एक ज़िन्दा मुक्तिदाना है। (1 कुरिन्थियों 11:26)। आरम्भ से ही मसीह की कलीसिया ऐसा ही करती आई है (प्रेरितों 20:5-7; 1 कुरिन्थियों 16:1,2)।

कुछ लोग प्रभु-भोज को "मास" कहकर सम्बोधित करते हैं, और वे ऐसा मानते हैं कि जब वे "मास" अर्थात, प्रभु-भोज लेते हैं तो रोटी और शीरा वास्तव में प्रभु यीशु की देह और लहू में परिवर्तित हो जाते हैं, और इस प्रकार यीशु का बलिदान फिर से हो जाता है। परन्तु बाइबल हमें ऐसा बिल्कुल नहीं सिखाती। बाइबल के अनुसार यीशु का बलिदान केवल एक ही बार हमेशा के लिये दिया गया था। (इब्रानियों 7:27; 9:12,24-28; 10:10-14; रोमियों 6:9)। यीशु को बार-बार बलिदान होने की आवश्यकता नहीं है। प्रभु-भोज की स्थापना के समय जब यीशु ने रोटी को लेकर अपने चेलों से कहा था, "लो, खाओ, यह मेरी देह है," और शीरे के विषय में कहा था, "तुम सब इसमें से पियो, क्योंकि यह वाचा का मेरा वोह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है," (मत्ती 26:26-28), तो यीशु ने अपनी देह और अपने लहू का उदाहरण दिया था। वोह उन्हें अपनी देह और अपना लहू वास्तव में नहीं दे रहा था, क्योंकि उस समय तो वोह स्वयं उनके सामने ज़िन्दा खड़ा था। यीशु के अनेक उदाहरणों में से यह भी एक उदाहरण था (यूहन्ना 10:7,14;15:5; मत्ती 5:13-14)। जब मसीही लोग एकत्रित होकर परमेश्वर की आराधना करते हैं तो वे विश्वास रखते हैं कि प्रभु उनके साथ है। (मत्ती 18:20)। क्योंकि हमारा मुक्तिदाता मरने के बाद फिर जी उठा था। वोह ज़िन्दा है, और प्रभु-भोज उसके लोगों को उसके बलिदान की निरन्तर याद दिलाता है।

आराधना करने के विषय में नए नियम में यह तो बताया गया है कि आज हमें परमेश्वर की उपासना किस प्रकार से करनी चाहिए, किन्तु क्या पहले करना चाहिए और क्या बाद में, ऐसी

कोई विधि नहीं बताई गई है। पुरुषों को आराधना में अगुवाई करनी चाहिए, जैसे कि उन्हें अपने घरों में और कलीसियाओं में भी करना चाहिए। (उत्पत्ति 1:26-27; 2:18; 3:16; 4:7; 1 कुरिन्थियों 11:2-16; 14:33-36; गलतियों 3:28; इफिसियों 5:21-33; कुलुस्सियों 3:18-19; 1 तीमुथियुस 2:1-15; 3:1-13; 1 पतरस 3:1-7)। आराधना शुद्ध मन से, व्यवस्थित रूप से, तथा सच्चाई के साथ की जानी चाहिए। (यूहन्ना 4:24; 1 कुरिन्थियों 14:40)। सच्ची और सही उपासना करने का एक नमूना इस प्रकार हो सकता है: सप्ताह के पहले दिन सभी मसीहीजन एक जगह एकत्रित होकर प्रार्थना के साथ आरम्भ करें। आत्मिक गीत गाएँ, और एक या दो भाई प्रार्थना में अगुवाई करें। कोई भाई बाइबल में से पढ़ सकता है। और यदि कोई उपदेश दे सकता है, तो बाइबल में से जो पढ़ा गया है उसे समझाए। फिर, प्रभु-भोज में भाग लें। कुछ और गीत या भजन गाए जा सकते हैं और प्रार्थनाएँ की जा सकती हैं। चन्दा इकट्ठा किया जाए जो किसी अच्छे काम के लिये, सहायता करने के लिये, या कलीसिया के काम के लिये इस्तेमाल में लाया जाए। इसके बाद, यदि कोई सूचना हो, तो उसे कलीसिया को बताया जा सकता है, अर्थात यदि कोई कलीसिया में बीमार है, या कोई और सूचना। अन्त में प्रार्थना के साथ उपासना को समाप्त करें। आरम्भ में मसीही लोग इसी ढंग से आराधना करते थे।

भविष्य

संसार के विषय में मसीही दृष्टिकोण यह है कि परमेश्वर ने आदि में सारे जगत की सृष्टि (उत्पत्ति) की थी। और एक दिन इस सारी सृष्टि का अंत हो जाएगा, और यह उस दिन होगा जब मसीह न्याय करने को आएगा। उस दिन सभी लोग परमेश्वर और यीशु मसीह के न्यायासन के सामने खड़े होंगे। उस दिन सभी लोग अपने-अपने प्रतिफल के अनुसार अनन्तकाल के लिये स्वर्ग में या नरक में भेजे जाएंगे। परमेश्वर ने इस सम्पूर्ण जगत को, यीशु मसीह के द्वारा, अपनी महिमा के लिये सृजा था। (फिलिप्पियों 2:9-11; कुलुस्सियों 1:16)। जीवन का आरम्भ परमेश्वर से हुआ है, और अनन्त जीवन की आशा का आधार वही है (1 तीमुथियुस 6:16)। परमेश्वर की इस योजना में आपका स्थान कहाँ है? आपको अपने भविष्य के बारे में अवश्य ही सोचना चाहिए। (भजन. 90:12; याकूब 4:14; मत्ती 16:26)।

हम सब को एक न एक दिन मृत्यु का सामना अवश्य ही करना पड़ेगा। बाइबल ऐसी शिक्षा नहीं देती कि मनुष्य मरने के बाद फिर से किसी रूप में जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है। पर मनुष्यों के लिये एक ही बार मरना नियुक्त है। (इब्रानियों 9:27)। मनुष्य की देह तो नाशवान है, परन्तु एक आत्मिक प्राणी होने के कारण, मनुष्य आत्मिक रूप से सदा ही वर्तमान रहेगा। (2 कुरिन्थियों 5:1; 2 पतरस 1:13-14)। मृत्यु का अर्थ है आत्मा का शरीर से अलग हो जाना। (याकूब 2:26)। मनुष्य को स्वाभाविक रूप में मृत्यु से भय लगता है, परन्तु मसीह का सुसमाचार हमें मृत्यु के

भय से मुक्त करता है। (भजन. 39:5; रोमियों 7:24; इब्रानियों 2:15; 1 कुरिन्थियों 15:26; फिलिप्पियों 1:21-23)। इसलिये हम सब को प्रभु यीशु मसीह और उसके सुसमाचार की आवश्यकता है। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि यीशु ने "मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।" (2 तीमुथियुस 1:10)। और यीशु मसीह ने ही मृत्यु के डंक, अर्थात पाप को नाश करके, हमें मृत्यु पर विजय पाने का अवसर दिया है। (1 कुरिन्थियों 15:54-57)।

मृत्यु के बाद, न्याय के दिन तक, मनुष्य की आत्मा किस स्थिति में या कहां रहती है? बाइबल में आत्मा के उस निवास स्थान को अधोलोक कहा गया है। कुछ लोग ऐसा भी सोचते हैं कि न्याय के दिन तक मनुष्यों की आत्माएँ सोती रहेंगी। बाइबल में यद्यपि मरे हुओं को 'सोए हुए' कहकर सम्बोधित किया गया है, पर इसका तात्पर्य इस बात से है कि जो लोग ज़िंदा हैं उनको मरे हुए सोए हुओं के समान प्रतीत होते हैं। (1थिस्सलुनीकियों 4:13)। सोए हुओं का अभिप्राय इस बात से है कि वे अब जीवित नहीं हैं (प्रकाशित. 14:13)। किन्तु बाइबल में कुछ स्थानों पर यह भी दर्शाया गया है कि जो लोग मर चुके हैं, वे अभी भी अपने होश में हैं। (2 कुरिन्थियों 5:8; लूका 16:19-31)। बाइबल के अनुसार, अधोलोक वोह स्थान है जहाँ मृत्यु के पश्चात आत्मा जाकर रहती है। अधोलोक दो भागों में बँटा हुआ है (लूका 16:26)। जो अच्छा स्थान है उसे स्वर्गलोक कहा गया है, और उसमें वे सब लोग हैं जो न्याय के दिन के बाद स्वर्ग में प्रवेश करके परमेश्वर के साथ रहेंगे। (लूका 23:39-43; प्रेरितों 2:27)। और जो बुरी जगह है उसे पीड़ाजनक स्थान कहा गया है, और उसमें वे सब लोग हैं जो न्याय के बाद नरक में जाएंगे। (लूका 16:23)। मृत्यु के समय प्रत्येक मनुष्य के हमेशा के आत्मिक निवास स्थान का चुनाव हो जाता है। मृत्यु के बाद किसी को भी दोबारा चुनाव करने का

अवसर नहीं मिलता। किन्तु कुछ लोग ऐसा मानते हैं, और सिखाते हैं कि "परगेटोरी" नाम का एक ऐसा स्थान है जहां मसीही लोगों की आत्माएं आग से तड़प-तड़प के शुद्ध होने के लिये जाती हैं और फिर स्वर्ग में प्रवेश करती हैं। परन्तु बाइबल ऐसी शिक्षा कदापि नहीं देती। किन्तु बाइबल के अनुसार, यदि एक मसीही अपने मरने तक मसीह में विश्वासी बना रहता है, तो मसीह यीशु की प्रायश्चित-रूपी मृत्यु के कारण वोह स्वर्ग में प्रवेश करेगा। (1 यूहन्ना 1:6-10)। इसलिये परगेटोरी जैसी शिक्षा मसीह के लहू की शक्ति का अपमान करती है।

प्रभु यीशु मसीह जगत के अन्त के समय आकाश में प्रकट होगा। परन्तु कोई भी नहीं जानता कि वोह कब आएगा (मत्ती 24:44)। यीशु ने तो यहाँ, तक कहा था कि स्वयं वोह भी नहीं जानता कि वोह कब वापस आएगा, परन्तु केवल परमेश्वर पिता ही जानता है। (मत्ती 24:36)। सो ऐसे लोगों से ख़बरदार रहें जो यीशु के दोबारा आने के समय को नियुक्त करते रहते हैं, और कुछ संकेतों की ओर इशारा करते हैं। यीशु के दोबारा आने की प्रतीज्ञा स्वयं परमेश्वर ने की है, और वोह अपनी प्रतीज्ञा अवश्य ही पूरी करेगा। कुछ लोग परमेश्वर को अपने समय के अनुसार चलाने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु परमेश्वर जानता है कि उसे कब क्या करना है (2 पतरस 3:1-14)। क्योंकि हम नहीं जानते कि यीशु कब वापस आएगा, इसलिये हमें हमेशा उसके आने के लिये तैयार रहना चाहिए (मत्ती 24:44)। जगत के अन्त में प्रभु यीशु के आने की शिक्षा के द्वारा हमें यह चेतावनी मिलती है कि हम उसके आने तक पृथ्वी पर पवित्र जीवन व्यतीत करें। जैसे कि पतरस ने लिखकर कहा था: "जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए?" (2 पतरस 3:11)। क्योंकि मसीही लोग जानते हैं कि यीशु के दोबारा आने पर उन्हें उद्धार और स्वर्ग में प्रवेश मिलेगा, इसलिये

उसके आने को बाइबल में "धन्य आशा" कहकर सम्बोधित किया गया है। (तीतुस 2:13)।

यीशु के दोबारा आने पर सब मनुष्यों का पुनरुत्थान होगा। प्रभु यीशु ने इस प्रकार कहा था: "इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वोह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, वे उसका शब्द सुनकर निकल आएंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे, और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना 5:28-29)। यीशु के आने तक जो लोग मर चुके होंगे वे सब जी उठेंगे, और जो लोग उस समय पृथ्वी पर जीवित होंगे, वे सब भी रूपान्तरित होकर, जी उठे लोगों के साथ, प्रभु के न्याय का सामना करेंगे और अपने-अपने प्रतिफल के अनुसार अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे। (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)। बाइबल के अनुसार, पुनरुत्थान के समय जब मनुष्य की आत्मा का मिलन उसके पुनर्जीवित शरीर के साथ होगा, तो उसका रूप बदला हुआ होगा। मनुष्य की देह का वोह नया रूप चिरस्थायी अर्थात अविनाशी होगा। (1 कुरिन्थियों 15:35-57)। यह तो हम नहीं जानते कि वोह रूप वास्तव में कैसा होगा, पर इतना जानते हैं, कि वोह वैसा ही होगा जैसा जी उठने के बाद स्वयं यीशु का था। (1 यूहन्ना 3:2)।

प्रभु यीशु के दोबारा आने के बाद तुरन्त ही जगत का अन्त हो जाएगा, और सब मनुष्यों का न्याय किया जाएगा। परमेश्वर और मसीह के द्वारा हम सबका न्याय होगा। (यूहन्ना 5:22,27; प्रेरितों 17:30,31; रोमियों 14:10; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:1; इब्रानियों 12:23)। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा, उन बातों के विषय में जो हमने अपने जीवन में की हैं, हम सबका न्याय करेगा। (प्रकाशित. 20:12; यूहन्ना 12:48; रोमियों 2:6,16)। उस दिन वोह सारे जगत के लोगों को दो भागों में बाँटेगा, वे जो बचे हुए होंगे और वे जो खोए हुए होंगे। (मत्ती 25:31-46)। बचे हुओं

से वोह कहेगा: "हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।" (मत्ती 25:34)। और खोए हुओं से कहा जाएगा, "हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।" (मत्ती 25:41)। मसीही लोगों के लिये न्याय का दिन डरने का दिन नहीं है, क्योंकि उन्हें उस दिन दंडित नहीं पर महिमान्वित किया जाएगा। (रोमियों 8:1; मरकुस 9:41; लूका 6:35)।

"स्वर्ग" एक ऐसा आत्मिक स्थान है जहां परमेश्वर के लोग हमेशा उसके साथ रहेंगे। स्वर्ग वास्तव में इतना उत्तम और सुन्दर है, कि मनुष्यों की भाषा में ऐसे शब्द ही उपलब्ध नहीं है जिनके द्वारा उसकी उत्तमता और सुंदरता को व्यक्त किया जा सके, इसलिये बाइबल में स्वर्ग का वर्णन अधिकांश रूप से उदाहरणपूर्ण या प्रतीकात्मक शब्दों के द्वारा ही किया गया है। (प्रकाशित. 21:1-22:5)। स्वर्ग की विशेषता इसलिये भी बड़ी है, क्योंकि वहां हम प्रभु यीशु मसीह के साथ रहेंगे। (यूहन्ना 14:1-3; फिलिप्पियों 1:23; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)। यह इस प्रकार से होगा जैसे कि हम एक विशाल दावत में शामिल होंगे। (मत्ती 22:1-14; प्रकाशित. 19:9) प्रेरित यूहन्ना को स्वर्ग का एक दृश्य दिखाया गया था, जिसका वर्णन यूहन्ना ने इन शब्दों में किया था :

> फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मुनष्यों के बीच में है। वोह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। वोह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।
>
> फिर उसने मुझे बिल्लोर की सी झलकती हुई, जीवन के जल

की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों-बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वोह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। फिर श्राप न होगा, और परमेश्वर और मेमने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। वे उसका मुंह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे"। (प्रकाशित. 21:3-4; 22:1-5)।

"नरक" शब्द का उपयोग एक ऐसे स्थान के लिये किया गया है जहाँ परमेश्वर नहीं है। वास्तव में "नरक" शब्द एक ऐसे शब्द से लिया गया है जिसका उपयोग यरुशलेम नगर के बाहर बने कूड़ेदान से किया जाता था। उस जगह कूड़ा-करकट निरन्तर जलता रहता था। वहां हमेशा आग और धुआं रहता था और गन्दी-सड़ी बदबू आती रहती थी। अर्थात वोह एक ऐसा भयानक और गंदा स्थान है जहां जाने से सब बचना चाहेंगे। बाइबल में जिस प्रकार से स्वर्ग के लिये सांकेतिक और प्रतीकात्मक शब्दों को उपयोग में लाया गया है, उसी तरह से नरक की वास्तविकता को समझाने के लिये भी ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। नरक एक अंधकारमय स्थान है, क्योंकि वहां परमेश्वर नहीं हैं। (मत्ती 25:30; 2 पतरस 2:4; यहूदा 13)। नरक को एक ऐसा स्थान कहा गया है जहां धुंआ और आग है (मत्ती 13:42; 25:41; मरकुस 9:48; प्रकाशित. 20:10-15), और वोह एक पीड़ाजनक स्थान है (मत्ती 25:30; प्रकाशित. 14:11)। जो मनुष्य नरक में जाएगा, वोह उसमें से कभी भी बाहर नहीं निकल पाएगा। नरक में कोई आशा नहीं है। (मत्ती 25:10, 46; प्रकाशित, 14:11)। इसीलिये यीशु ने बार-बार

अपनी शिक्षा में लोगों को नरक के विषय में चेतावनी दी थी। (लूका 12:4-5; 13:28; मत्ती 5:29-30; 10:28)।

ऐसे लोगों से सावधान रहें जो यह शिक्षा देते हैं कि यीशु पृथ्वी पर राज्य करने के लिये आएगा। वे लोग यीशु के दोबारा आने और जगत के अन्त के समय के लिये अलग-अलग तिथियों को भी नियुक्त करते रहते हैं। वे कहते हैं कि एक दिन मसीह अचानक से प्रकट होगा और अपने लोगों को कुछ वर्षों के लिये अपने साथ ले जाएगा। और फिर वोह उन लोगों के साथ कुछ समय के बाद पृथ्वी पर आएगा और 1000 वर्षों तक पृथ्वी पर राज्य करेगा। परन्तु बाइबल में हमें इस प्रकार की कोई शिक्षा नहीं मिलती। बाइबल हमें बड़े ही स्पष्ट शब्दों में बताती है, कि जब यीशु आएगा तो सब लोग जी उठेंगे, और सब का न्याय किया जाएगा, और सब अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे। यीशु न तो पृथ्वी पर दोबारा आएगा और न ही पृथ्वी पर आकर वोह राज्य करेगा। (यूहन्ना 5:28,29; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17; इब्रानियों 9:28; प्रकाशित. 1:7; 1 कुरिन्थियों 15:23-24)।

जो लोग ऐसा मानते हैं कि यीशु पृथ्वी पर आकर एक हज़ार साल तक राज्य करेगा, विशेष रूप से वे दो गलतियां करते हैं। एक तो यह, कि वे ऐंसा सोचते हैं कि परमेश्वर का राज्य एक भौतिक और इस संसार का राज्य है। परन्तु उसका राज्य, बाइबल की शिक्षानुसार, एक आत्मिक राज्य है, और वोह आज भी अपने लोगों के बीच में राज्य कर रहा है। (यूहन्ना 18:36; रोमियों 14:17)। यीशु तो आज भी राजाओं का राजा है, और उसका राज्य आज भी वर्तमान है (मत्ती 3:2; 11:12; 12:26-28; मरकुस 9:1; लूका 1:32-33; 16:16; प्रेरितों. 2:29-33; 7:56; इफिसियों 1:20; कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 2:9; 12:28; प्रकाशित. 1:6,9; 11:15)। दूसरे, वे लोग बाइबल में से बहुत से ऐसे हवाले देते हैं जो वास्तव में बहुत पहले ही पूरे हो चुके हैं, पर वे कहते हैं कि फलीस्तीन

में उनका पूरा होना अभी बाकी है। अधिकांश रूप से जिन हवालों कि ओर वे ध्यान दिलाते हैं, वे या तो उस समय पूरे हो गए थे जब इसराएली बाबुल के दासत्व में से निकलकर लौट आए थे, या उस समय जब ई.स. 70 में रोमी सेना ने यरुशलेम को घेरकर उसे बर्बाद कर दिया था। (मत्ती 24:1-28; मरकुस 13:1-23; लूका 21:5-36)। वे लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में से पढ़कर लोगों को सिखाते हैं कि उसमें लिखी बातों का पूरा होना अभी बाकी है, पर वास्तव में सच्चाई यह है कि लगभग वे सारी बातें जिन्हें हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में आज पढ़ते हैं पहले ही पूरी हो चुकी हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक वास्तव में, पहली शताब्दी के उन मसीही लोगों के लिये लिखी गई थी जो मसीह में अपने विश्वास के कारण रोमी साम्राज्य द्वारा सताए जा रहे थे (प्रकाशित. 17:1-2,15-18)। क्योंकि मसीही लोग रोमी सम्राट और उनकी मूरतों के सामने झुकने से मना करते थे, इसलिये उन्हें सताया जा रहा था। सो उन्हें तसल्ली और सांत्वना देने के लिये प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखी बातों को उन्हें लिखा गया था।

(प्रकाशित. 1:9; 2:10, 13; 6:9-11; 7:9, 13-14; 9:20-21; 12:17; 13:5-6,15-17; 14:9-13; 16:2, 5-6; 17:6; 18:24; 19:2,20; 20:4)।

त्रिएक

बाइबल में "त्रिएक" शब्द का वर्णन तो हमें नहीं मिलता, परन्तु परमेश्वरत्व के बारे में हम अवश्य पढ़ते हैं, और इसका अभिप्राय इस बात से है कि यद्यपि परमेश्वर तो एक ही है परन्तु उस एक परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं। संसार में ऐसे लोग भी हैं जिनका मत यह है कि अनेकों परमेश्वर हैं। परन्तु मसीही लोग केवल एक ही परमेश्वर को मानते हैं। (व्यवस्था. 6:4; मरकुस 12:29; 1 कुरिन्थियों 8:4; याकूब 2:19)। किन्तु उस एक परमेश्वर को हम तीन रूप में मानते हैं, अर्थात, पिता, पुत्र, और पवित्र-आत्मा। और यद्यपि ये तीनों अलग-अलग हैं परन्तु फिर भी तीनों एक हैं। हम यीशु मसीह के बारे में देख चुके हैं कि वोह परमेश्वरत्व में है, और इसलिये वोह परमेश्वर है। (यूहन्ना 1:1; 20:28; फिलिप्पियों 2:6)। और क्योंकि वोह परमेश्वर है इसलिये हम उसकी स्तुति प्रशंसा करते हैं (प्रकाशित. 5:1-14)। और यही बात पिता और पवित्रात्मा के बारे में भी सच है।

पिता परमेश्वर है, अर्थात वोह परम प्रधान है। (1कुरिन्थियों 8:6; गलतियों 1:1; इफिसियों 4:6; 1 पतरस 1:2; यूहन्ना 6:27)। अधिकतर "परमेश्वर" शब्द जहाँ बाइबल में आया है तो उसे पिता के लिये ही उपयोग में लाया गया है। परमेश्वर महान है। परमेश्वर के लिये बाइबल में बताया गया है, कि वोह स्वयं ही सर्वसिद्ध है (यशायाह 4:13-14; भजन. 50:12; प्रेरितों 17:25), अनन्त है (भजन 90: 2-4; व्यवस्था 32:40; याकूब 1:17), वोह आत्मा है (यूहन्ना 4:24; व्यवस्था. 4:15; प्रेरितों 17:29), सर्वशक्तिमान है

(यशायाह 14:27; भजन. 2:4), सर्वज्ञानी अर्थात सब कुछ जानता हैं (भजन. 147:5), और सर्वव्यापी है (यिर्मयाह 23:23-24; भजन. 139:7-12)। परमेश्वर पिता प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8; भजन. 118:1-29; रोमियों 8:35-39), पवित्र है (यशायाह 6:3-5; भजन. 99:9; प्रकाशित. 15:4), दयावान है (व्यवस्था 4:31; भजन. 145:8), और धर्मी है (यशायाह 5:16; भजन. 11:7)। परमेश्वर सारे जगत का सृष्टिकर्त्ता, सर्वशक्तिमान है। वोह हम सब के आदर भक्ति और महिमा के योग्य है; जिसकी हमें आराधना और स्तुति करनी चाहिए। (प्रकाशित. 4:1-11; मत्ती 4:10; लूका 4:8; व्यवस्था. 6:13)।

ऐसे ही बाइबल में, पवित्रात्मा को भी परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया गया है। जैसे कि हम प्रेरितों 5:3-4 में पढ़ते हैं कि हनन्याह ने जब "पवित्र आत्मा" से झूठ बोला था तो उसने वास्तव में "परमेश्वर" से झूठ बोला था। (1कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19-20)। इसलिये पवित्र आत्मा परमेश्वर है। पवित्र आत्मा में भी वही गुण हैं जो परमेश्वर में हैं (रोमियों 8:2; यूहन्ना 16:13; इब्रानियों 9:14; भजन. 139:7)। पवित्र आत्मा जो करता है वोह काम केवल परमेश्वर ही कर सकता है (उत्पत्ति 1:2; भजन. 104:30; यूहन्ना 3:8; रोमियों 8:11; 2 पतरस 1:21)। पवित्र आत्मा और परमेश्वर एक ही समान हैं (मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13:13) और परमेश्वर की आराधना करना पवित्रात्मा की आराधना करना है। (1 कुरिन्थियों 3:16)। पवित्र आत्मा कोई "वस्तु" या "शक्ति" नहीं है। वोह आत्मिक व्यक्तित्व है जिससे मनुष्य झूठ बोलकर उसका मन शोकित कर सकता है (प्रेरितों 5:3-4; इफिसियों 4:30)। पवित्रात्मा एक मसीही व्यक्ति के भीतर, उसे पवित्र और मज़बूत बनाने के लिये, रहता है। प्रेरितों 2:38; 5:32; रोमियों 8:9-16,26; 1 कुरिन्थियों 3:16-17; 6:11, 19-20; 12:13; 2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5; गलतियों 4:6; इफिसियों 1:13; 3:14-16; तीतुस 3:5; 1 यूहन्ना 4:13;

यहूदा 19)। पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों की सहायता करता है और उनके लिये विनती करता है (रोमियों 8:26-27)।

पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, अलग-अलग होने के बावजूद, तीनों मिलकर एक परमेश्वर हैं। (यूहन्ना 10:30; 15:26; मत्ती 28:19; 1 पतरस 1:2; 1 कुरिन्थियों 12:4-6)। इसीलिये पौलुस ने तीनों का वर्णन एक ही जगह करके यूं कहा था: "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सबके साथ होती रहे।" (2 कुरिन्थियों 13:14) हम परमेश्वर को त्रिएक इसलिए मानते हैं क्योंकि वोह एक तो है पर तौभी उसके तीन अलग अलग व्यक्तित्व हैं। परमेश्वर तीन नहीं है, परमेश्वर केवल एक ही है। पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा तीन अलग-अलग परमेश्वर नहीं हैं, परन्तु वे एक ही परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं। यह बात समझने में हमें अटपटी अवश्य लगती है, और कदाचित इसे पूरी तरह से हम समझ भी नहीं सकते। अर्थात एक ही परमेश्वर के तीन अलग-अलग व्यक्तित्व कैसे हो सकते हैं? यह समझना हमारे लिये कठिन है। पर हम मनुष्य हैं। हमारे सोच-विचार सीमित हैं। हम परमेश्वर की तरह नहीं सोच सकते। हम सीमित हैं। परमेश्वर असीमित है। वोह एक होकर भी त्रिएक है। वोह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है।

पवित्र-आत्मा और आश्चर्य-कर्म

बाइबल के लिखे जाने के पूर्व, अपने कुछ चुने हुए लोगों के द्वारा, परमेश्वर ने अनेकों आश्चर्यकर्म किए थे। परमेश्वर के पवित्रात्मा की सामर्थ्य से किए गए उन सभी आश्चर्यकर्मों का विशेष उद्देश्य था परमेश्वर के वचन को दृढ़ करना। (मत्ती 9:4-5; 12:28-29; मरकुस 2:10-11; 16:17-20; लूका 5:24; यूहन्ना 21:24-25; प्रेरितों 2: 32-33; 2 कुरिन्थियों 12:12)। उस बड़े उद्धार का वर्णन करके, जिसे परमेश्वर ने सब मनुष्यों पर प्रकट किया है, इब्रानियों की पत्री के लेखक ने कहा था: "जिसकी चर्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ। और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ्य के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।" (इब्रानियों 2:3-4)। जब परमेश्वर ने अपनी इच्छा को मसीह में मनुष्यों पर पूरी तरह से प्रकट कर दिया था तो उस समय तक आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य मुख्य रूप से लगभग पूरा हो चुका था। पहली शताब्दी के अन्त तक आश्चर्यकर्म लगभग समाप्त हो चुके थे, और दूसरी शताब्दी के आरम्भ से ही उनका अन्त हो चुका था।

पर आज भी बहुतेरे लोग हैं जो आश्चर्यपूर्ण कामों को करने के दावे करते हैं। उनमें से बहुत से ऐसे हैं जो पवित्र-आत्मा की सामर्थ्य से अद्भुत कामों को करने का दावा करते हैं। परन्तु जो कुछ भी वे लोग करते हैं, वे सब कार्य उन आश्चर्य के कामों से बिल्कुल भिन्न हैं जिनके बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं। क्या

आज पृथ्वी पर ऐसा कोई व्यक्ति है जो किसी को नई आंखें और नए पैर और नए हाथ दे सकता है? क्या ऐसा कोई इनसान है जो मरे हुओं को ज़िंदा कर सकता है? वास्तव में आज इस प्रकार के आश्चर्यपूर्ण सामर्थ्य के काम कोई भी नहीं कर सकता। परन्तु प्रभु यीशु मसीह ने ठीक ऐसे ही आश्चर्यपूर्ण काम किए थे, और उन लोगों ने भी किये थे जिन्हें उसने पहली शताब्दी में ऐसे-ऐसे कामों को करने की सामर्थ्य दी थी। पर जो लोग आज प्रभु यीशु मसीह या पवित्रात्मा के नाम से कोई आश्चर्यपूर्ण काम करने का दावा करते हैं वे लोगों को मात्र मूर्ख बनाते हैं। क्योंकि जब लोगों के पास परमेश्वर का वचन, अर्थात बाइबल, लिखित रूप में उपलब्ध नहीं था, तो लोगों को विश्वास दिलाने के लिये आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता पड़ती थी, पर आज हमारे पास परमेश्वर का वचन लिखित रूप में बाइबल में मौजूद हैं, इसलिये आज हमें आश्चर्यकर्मों को देखने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग प्रार्थनाएं करके किसी दर्द या पीड़ा से चंगाई देने का आज दावा करते हैं, वोह केवल एक मानसिक चिकित्सा है, जो अन्य लोग भी प्रदान करते हैं, अर्थात वे जो यीशु मसीह में बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते। ऐसे ही कुछ लोग कहते हैं कि वे आज उन लोगों की तरह अन्य भाषाओं में बोल सकते हैं जिनके बारे में हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं। पर वे भी अपने ढोंग के द्वारा लोगों को मूर्ख बनाते हैं। क्योंकि नए नियम में जो लोग अन्य भाषाओं में बोलते थे, वे वास्तव में भाषाएं होती थीं जिन्हें लोग समझ सकते थे, पर जो लोग आज ऐसी भाषाओं को बोलने के दावे करते हैं वे केवल कुछ आवाज़ें गले से निकालकर व्यर्थ का शोर मचाते हैं। (प्रेरितों 2:6,8)। संसार भर में आज ऐसे बहुत से लोग हैं जो भोले-भाले लोगों को धर्म के नाम पर मूर्ख बना रहे हैं। ऐसे लोगों के लिये टेलेविज़न एक अच्छा माध्यम बन गया है। लेकिन क्या कोई व्यक्ति वास्तव में आज उस प्रकार का आश्चर्यजनक कोई काम कर सकता

है जैसे कि हम बाइबल में पढ़ते हैं? कदापि नहीं। कोई मनुष्य वास्तव में आज एक भी आश्चर्यजनक काम नहीं कर सकता। किसी को भी कोई वैसी चंगाई नहीं दे सकता, न किसी ऐसी भाषा में बोल सकता है जिसे उसने सीखा नहीं है, और न किसी मरे हुए को ज़िन्दा कर सकता है।

जैसा कि हम देख चुके हैं, आश्चर्य के कामों को करने की सामर्थ्य आरम्भ में परमेश्वर ने अपने कुछ लोगों को अवश्य दी थी, और इसलिये दी थी ताकि उनके वचन को सुनकर और आश्चर्यपूर्ण कामों को देखने के द्वारा, लोग विश्वास लाएं, अर्थात् वचन को दृढ़ करने के लिये आश्चर्यपूर्ण कामों की आवश्यकता थी। पर जब वचन दृढ़ होकर बाइबल के रूप में मनुष्यों के पास आ गया, तो परमेश्वर ने अद्भुत कामों और चिन्हों को हटा लिया था, क्योंकि अब उनकी कोई आवश्यकता नहीं थी। बाइबल में इसलिये हम पढ़ते हैं कि अब हम "देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।" (2 कुरिन्थियों 5:7)। जब मसीह ने आरम्भ में अपनी कलीसिया को बनाया था तो उस समय कलीसिया में बाइबल पूरी तरह से लिखी उपलब्ध नहीं थी। नए नियम की पत्रियां परमेश्वर के पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा उस समय लिखी जा रही थीं। इसलिये उनके बीच में परमेश्वर अद्भुत काम और चिन्ह करवा रहा था, ताकि उनका विश्वास उन चिन्हों को देखने के द्वारा परमेश्वर के वचन पर दृढ़ हो। जैसे कि एक छोटे बच्चे को आरम्भ में खिलौनों की और हाथ से पकड़कर चलनेवाली गाड़ी की और ऐसे ही कुछ अन्य चीज़ों की आवश्यकता उस समय तक होती है जब तक कि वोह बड़ा न हो जाए, ऐसे ही कलीसिया को भी आरम्भ में परमेश्वर के वचन पर विश्वास लाने के लिये अद्भुत कामों को देखने की आवश्यकता थी। परन्तु जब "सर्वसिद्ध" अर्थात परमेश्वर का वचन पूर्ण रूप से हमारे पास आ गया तो अब हमें चिन्हों को देखने की ज़रूरत नहीं है। (1कुरिन्थियों 13:8-13; इफिसियों

4:11-16)। आज यदि कोई विश्वास लाने के लिये अद्‌भुत कामों और चिन्हों को देखने की चेष्ठा, करता है, तो वोह वैसा ही करता है जैसे कि कोई बड़ा आदमी अपने बचपन की अवस्था में जाने की कल्पना करता है। (मत्ती 12:38-39; 1कुरिन्थियों 11:13)। बात तो यह है ध्यान देने की, कि जिस समय आरम्भ में कलीसिया में अद्‌भुत काम करने के वरदान मौजूद थे, उस समय भी पौलुस ने उनकी तुलना प्रेम से करके कहा था की प्रेम वास्तव में सबसे बड़ा है। (1 कुरिन्थियों 12:29-13:13)। पौलुस ने कहा था: पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इनमें सबसे बड़ा प्रेम है। (1 कुरिन्थियों 13:13; मत्ती 22:36-40)।

पवित्र-शास्त्र

बाइबल में मौजूद पुराने नियम और नए नियम की पुस्तकों को मसीहीयत में अधिकार के रूप में माना जाता है। किसी भी धार्मिक विषय पर समाधान के लिये बाइबल में लिखी बातों को ही सर्वोच्च माना जाता है। बाइबल ही एक ऐसी पुस्तक है जिसमें हम मनुष्यों के लिये परमेश्वर की इच्छा को पढ़ते हैं। (भजन. 119:105)। क्योंकि बाइबल की पुस्तकों को परमेश्वर के पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा गया था, इसलिये बाइबल कोई आम या साधारण या अन्य पुस्तकों की तरह एक पुस्तक नहीं है। परमेश्वर का वचन जीवित है, और मनुष्य को अनन्त जीवन का मार्ग बताता है (इब्रानियों 4:12)। बाइबल में लिखी बातें परमेश्वर की ओर से हैं। ये बातें मनुष्यों के मनों की उपज या कल्पना या दृष्टिकोण नहीं हैं। (2 पतरस 1:20-21)। जैसे कि पौलुस ने लिखकर कहा था, कि: "सम्पूर्ण पवित्र-शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (2 तीमुथियुस 3:16-17)। बाइबल के अलावा अन्य पुस्तकों को जानकारी के लिये पढ़ा जा सकता है। परन्तु मुक्ति और स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के लिये बाइबल को पढ़ना और उसमें लिखी बातों को मानना ज़रूरी है। (याकूब 1:21; 2 तीमुथियुस 3:15; 1 पतरस 1:22-25; यूहन्ना 20:30-31)।

बाइबल की छियासठ पुस्तकों को चालीस अलग-अलग लोगों ने परमेश्वर से प्रेरणा पाकर लगभग 1500 वर्षों की अवधि में

अलग-अलग स्थानों में रहकर लिखा था। बाइबल की पुस्तकों को दो भागों में, पुराना नियम और नया नियम में, बांटा गया है। पुराने-नियम की पुस्तकों को मूसा के काल में लिखा गया था। अधिकांश रूप से पुराने नियम में लिखी बातें इसराएलियों के लिये थीं, जिनमें यह बताया गया था कि उन्हें कैसे रहना चाहिए और कैसे परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। पुराने नियम में आरम्भिक ऐतिहासिक जानकारी, भक्ति-गीत, नीतिवचन और अनेक भविष्यवाणियों को भी हम पढ़ते हैं। मसीही लोगों का यह विश्वास है कि पुराने नियम में लिखी सभी बातें परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा ही लिखी गई थीं। (2 तीमुथियुस 3:16; 2 पतरस 1:21; यूहन्ना 10:35)। किन्तु पुराने नियम में लिखी आज्ञाएं आज हमारे लिये नहीं हैं। उन आज्ञाओं को परमेश्वर ने अपनी प्रजा के लोगों अर्थात इसराएलियों को दिया था। (व्यवस्था. 5:1-2; यहेजकेल 20:10-12)। यीशु मसीह के पृथ्वी पर आने के बाद एक नए काल अर्थात नए नियम की स्थापना हुई थी। (मत्ती 5:17; कुलुस्सियों 2:14; इफिसियों 2:15; रोमियों 6:14; 7:4; 10:4)। नए नियम की स्थापना के बाद पुराने नियम को हटाकर समाप्त कर दिया गया था, और आज हम, अर्थात मसीही, प्रभु यीशु के नए नियम के अधीन हैं। (गलतियों 3:23-26; इब्रानियों 7:12; 8:1-13; 10:1-10; कुलुस्सियों 2:14)। इसका एक उदाहरण हमें इस बात में मिलता है कि आज हमें पशुओं को बलिदान करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीह ने स्वयं हमेशा के लिये अपने आप को बलिदान कर दिया है।

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि आज पुराने नियम में से हम पढ़ें ही नहीं, इसलिये क्योंकि आज हम पुराने नियम के अधीन नहीं है। पहली शताब्दी में भी मसीही लोग पुराने नियम की पुस्तकों में से हवाले देकर प्रचार किया करते थे। (प्रेरितों 2:14-36; 8:31-35; 17:2-3,11; 18:28; 28:23)। पौलुस ने कहा था कि पुराने नियम में लिखी बातों से आज हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है

(1 कुरिन्थियों 10:11; रोमियों 15:4)। परमेश्वर ने संसार को कैसे बनाया था; पाप ने कैसे जगत में प्रवेश किया था और परमेश्वर ने मनुष्यों का पाप से उद्धार करने के लिये क्या योजना बनाई थी, इन सब बातों के बारे में हमें पुराने नियम को पढ़कर ही मालूम पड़ता है। बहुत सी ऐतिहासिक जानकारियाँ भी हमें पुराने नियम में मिलती हैं। पुराने नियम में हम उन लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को माना था और इसलिये परमेश्वर ने उन्हें आशीषित किया था, और उन लोगों के बारे में भी हम पढ़ते हैं, जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं माना था और इस कारण परमेश्वर ने उन्हें दंडित किया था। पुराने नियम में यीशु मसीह के बारे में सैकड़ों वर्ष पहले लिखा गया था, और बताया गया था कि वोह क्यों पृथ्वी पर आएगा, उसका जन्म कैसे और कहां होगा, और कैसे परमेश्वर उसे सारे जगत के पापों के लिये बलिदान करेगा। सो पुराने नियम से पढ़ना हमारे लिये बड़ा ही लाभदायक है। किन्तु हमें यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि पुराने नियम में लिखी आज्ञाएं आज हमारे लिये नहीं हैं। पुराना नियम उन लोगों को दिया गया था जो मसीही नहीं थे, परन्तु आज हमें नया नियम दिया गया है, जिसमें लिखी आज्ञाओं के अनुसार आज हमें चलना चाहिए। (गलतियों 5:4)।

नया नियम हमें यीशु मसीह और उसकी कलीसिया के बारे में विस्तार से बताता है। नया नियम हमें बताता है कि सुसमाचार क्या है, और किस प्रकार से उसे माना जा सकता है, और उसे मानकर कैसे कोई अपने पापों से मुक्ति पाकर एक मसीही बनता है। सच्ची मसीहीयत और मसीही जीवन वास्तव में क्या है, नया नियम ही हमें बताता है। नए नियम की कुछ पुस्तकों को मसीह के उन चेलों ने लिखा था जो उसके जीवन और उसकी मृत्यु और कब्र में गाड़े जाने के और उसके जी उठने के और उसके स्वर्ग में वापस जाने के स्वयं गवाह थे। अन्य पुस्तकों के लेखक वे थे

जिन्हें प्रेरित होने के लिये बुलाया गया था। (रोमियों 1:1; गलतियों 1:1; 1पतरस 1:1; 2 पतरस 1:1)।

बाइबल पढ़ने और समझने के लिये एक अच्छा सुझाव यह है, कि सबसे पहले नए नियम को आरम्भ से पढ़ा जाए और इसके बाद पुराने नियम की पुस्तकों को पढ़ा जाए।

बाइबल की पुस्तकों का सारांश

पुराना नियम

उत्पत्ति : संसार और मनुष्य की उत्पत्ति का वर्णन तथा मनुष्यों के साथ परमेश्वर का सम्बन्ध आरम्भ में कैसा था।

निर्गमन : इसराएलियों का मिसर के दासत्व से मुक्त होना।

लैव्यव्यवस्था : धार्मिक रीति-रिवाज़ तथा इसराएलियों के लिये नैतिक नियम।

गिनती : इसराएलियों का जंगलों में समय बिताने का वर्णन।

व्यवस्थाविवरण : परमेश्वर तथा इसराएलियों के बीच कायम व्यवस्था का विवरण।

यहोशू : प्रतिज्ञा किए देश पर विजय पाना तथा इसराएलियों में उसका बंटवारा।

न्यायियों : इसराएल राज्य बनने से पहले इसराएलियों का इतिहास।

रुत : राजा दाऊद की परनानी की कहानी।

1 शमूएल : शमूएल, शाऊल और दाऊद की जीवनी।

2 शमूएल :	इसराएलियों के दूसरे राजा, राजा दाऊद के जीवन के बारे में।
1 राजा :	राजा सुलैमान तथा अन्य राजाओं और एलिय्याह के जीवनों का वृत्तांत।
2 राजा :	एलिय्याह और एलीशा के बारे में तथा इसराएल और यहूदा के राज्यों का वर्णन और बाबुल में दासत्व में रहने का इतिहास।
1 इतिहास :	वंशावलियां तथा दाऊद के राज्य का विवरण।
2 इतिहास :	सुलैमान तथा अन्य राजाओं के राज्यों के विवरण से लेकर बेबीलोन द्वारा यरूशलेम के पतन तक।
एज्रा :	इसराएलियों की बेबीलोन से वापसी, मन्दिर का पुनःनिर्माण, तथा एज्रा का काम।
नहेम्याह :	नहेम्याह की अगुवाई में यरूशलेम की दीवार को फिर से खड़ा करना।
एस्तेर :	एस्तेर द्वारा यहूदी लोगों की फ़ारस में मुक्ति का वर्णन।
अय्यूब :	जब एक धर्मी जन पर विपत्तियां आईं तो परमेश्वर ने उसे क्या प्रतिफल दिया।
भजन-संहिता :	भजनों तथा प्रार्थनाओं का संग्रह।
नीतिवचन :	शिक्षाप्रद बुद्धिमानी के वचन, अधिकतर सुलैमान ने कहे थे।
सभोपदेशक :	जीवन के अर्थ तथा उद्देश्य पर टिप्पणियां।

श्रेष्ठगीत :	एक प्रेम कविता।
यशायाह :	मसीह के जगत में आने तथा परमेश्वर के राज्य की स्थापना के विषय में भविष्यवाणियों की पुस्तक।
यिर्मयाह :	बेबीलोन द्वारा यहूदा के पतन के बारे में भविष्यवाणी।
विलापगीत :	बेबीलोन द्वारा यरूशलेम को पराजित करने पर विलाप।
यहेजकेल :	बेबीलोन द्वारा यहूदा को बन्धुवाई में ले जाने तथा बाद में यहूदा की रिहाई का वर्णन।
दानिय्येल :	बन्धुवाई में बेबीलोन में घटी घटनाएं तथा उनके इतिहास पर परमेश्वर का अधिकार।
होशे :	इसराएलियों के अविश्वास तथा उनके प्रति परमेश्वर के प्रेम को होशे द्वारा गोमेर से विवाह सम्बन्ध में दर्शाया गया है।
योएल :	टिड्डियों द्वारा भयंकर आक्रमण के बाद मन फिराकर परमेश्वर के पास लौट आने संबंधी भविष्यवाणी।
आमोस :	इसराएल का ध्यान समाजिक न्याय पर दिलाना।
ओबद्याह :	यरूशलेम के पतन पर ऐदोम द्वारा आनन्द मनाने की निन्दा।
योना :	एक अनिच्छुक भविष्यवक्ता द्वारा नीनवे में प्रचार करना।

मीका : अन्याय तथा व्यर्थ के धार्मिक रीति-रिवाज़ों की निन्दा तथा सत्य धर्म की ओर ध्यान दिलाना।

नहूम : नीनवे के ऊपर परमेश्वर का न्याय।

हबक्कूक : अधर्मियों के फलने-फूलने तथा निर्दोष लोगों पर उपद्रव के कारण परमेश्वर के न्याय में विश्वास को झटका लगना।

सपन्याह : यहूदा तथा अन्य लोगों को उनके पाप के कारण परमेश्वर द्वारा दंड देना।

हाग्गै : यहूदियों को फिर से मन्दिर बनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाना।

ज़कर्याह : मन्दिर को फिर से बनाया जाना और मसीह के आने की आशा।

मलाकी : अधर्म में जी रहे इसराएल को मन फिराने का परामर्श।

नया नियम

मत्ती : मसीह के सुसमाचार की चारों पुस्तकों में से सबसे पहली पुस्तक जिसमें यीशु मसीह के जीवन और शिक्षाओं का वर्णन मिलता है।

मरकुस : सुसमाचार की पुस्तकों में सबसे छोटी पुस्तक जिसमें विशेषकर यीशु के कामों पर ध्यान दिलाया गया है।

लूका : सुसमाचार की इस पुस्तक में दर्शाया गया है कि यीशु सबसे प्रेम करता है।

यूहन्ना :	सुसमाचार की अंतिम पुस्तक पाठकों को यीशु में विश्वास लाने के लिये प्रेरित करती है।
प्रेरितों के काम :	कलीसिया के आरम्भ का इतिहास, जिसमें प्रेरित पतरस तथा पौलुस के कामों पर ध्यान दिलाया गया है।
रोमियों :	पौलुस द्वारा लिखी गई तेरह पत्रियों में से एक जिसमें परमेश्वर के उस उद्धार की ओर ध्यान दिलाया गया है जिसे उसने यीशु मसीह में सबको प्रदान किया है।
1 कुरिन्थियों :	कुरिन्थुस में कलीसिया में उत्पन्न हुई समस्याओं को सुधारने के लिये लिखी गई।
2 कुरिन्थियों :	स्वयं को और अपनी प्रेरिताई को सही ठहराने के लिये पौलुस ने इस पत्री को लिखा था।
गलतियों :	विश्वास से धर्मी ठहराए जाने पर बल, तथा यहूदियों की व्यवस्था को कलीसिया पर न बांधने का आग्रह।
इफिसियों :	मसीह और उसकी कलीसिया में परमेश्वर के सदाकाल के उद्देश्य का पूरा होना।
फिलिप्पियों :	सुसमाचार का आनन्द तथा पौलुस की कृतज्ञता।
कुलुस्सियों :	यह पत्री कलीसिया को मसीह में बने रहने और गलत शिक्षाओं से ख़बरदार रहने के लिये लिखी गई थी।
1 थिस्सलुनीकियों :	मसीह का दोबारा आना, कलीसिया में जीवन, तथा पौलुस का प्रचार कार्य।

2 थिस्सलुनीकियों : मसीह के दोबारा आने तक उसके कामों में बने रहने के लिये परामर्श।

1 तीमुथियुस : एक नौजवान प्रचारक को, जो झूठे शिक्षकों का सामना कर रहा था, प्रोत्साहित करने के लिये यह पत्री लिखी गई थी।

2 तीमुथियुस : पौलुस ने अपनी मृत्यु के कुछ ही समय पहले इस पत्री को तीमुथियुस को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से लिखा था।

तीतुस : एक और नौजवान प्रचारक को कुछ ख़ास परामर्श।

फिलेमोन : एक मसीही से पौलुस का आग्रह कि वोह अपने उस दास को क्षमा करके स्वीकार कर ले जो उसके पास से भाग गया था परन्तु अब एक मसीही बन गया था।

इब्रानियों : मसीह सब याजकों के ऊपर महायाजक है, और सुसमाचार पुराने नियम की व्यवस्था से श्रेष्ठ है।

याकूब : मसीही जीवन के लिये व्यावहारिक निर्देश।

1 पतरस : अपने विश्वास के कारण अत्याचारों के बीच पवित्र बने रहना।

2 पतरस : कलीसिया में झूठी शिक्षा देनेवालों से संघर्ष करना।

1 यूहन्ना : गलत शिक्षा देनेवालों से कलीसिया को सावधान रहने की सलाह।

2 यूहन्ना :	कलीसिया में एक-दूसरे के प्रति प्रेम रखने का आग्रह, तथा झूठे प्रचारकों के विरुद्ध चेतावनी।
3 यूहन्ना :	एक मसीही के नाम व्यक्तिगत पत्र।
यहूदा :	गलत शिक्षा देनेवालों के विरुद्ध चेतावनी।
प्रकाशितवाक्य :	उन मसीहियों के नाम सांकेतिक भाषा में लिखा गया था जो रोमी साम्राज्य में प्रतिदिन अपने विश्वास के कारण अत्याचारों का सामना कर रहे थे, उन्हें आशा, भरोसा और सांत्वना देने के लिये, और यह बताने के लिये कि अंत में विजय उन्हीं को मिलेगी।

अन्त में

मसीहीयत क्या है? इस विषय पर इतने विस्तार से देख लेने के बाद, यह निष्कर्ष निकालना सहज है। मसीहीयत का अर्थ है यह विश्वास करना कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता है। यीशु मसीह के द्वारा ही परमेश्वर ने अपने प्रेम को और अपनी इच्छा को सारे संसार पर प्रदर्शित किया है। मसीह यीशु का एक अनुयायी बनने का मलतब है "मसीह को जानना" और "उसके समान" बनने का यत्न करना, अपने जीवन में उसे स्थान देना (फिलिप्पियों 3:10; गलतियों 2:20; 4:19; इफिसियों 4:13)। एक मसीही वोह है "जो परमेश्वर के पुत्र में विश्वास के द्वारा जीवित रहता है।" (गलतियों 2:20)। मसीह को जानकर उसका अनुकरण करना संसार में सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण काम है। (फिलिप्पियों 1:21; 3:7-9), क्योंकि सम्पूर्ण संसार के लिये आशा और उद्धार केवल उसी में है। (प्रेरितों 4:12; यूहन्ना 14:6)।

यीशु मसीह के महत्त्व का वर्णन बाइबल में इब्रानियों की पत्री के लेखक ने इन शब्दों में किया है:

पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है। वोह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है। वोह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा; और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उनसे बड़े पद

का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।

प्रेरित पौलुस ने भी बड़े ही सुन्दर और उमदा शब्दों में यीशु के बारे में यूँ लिखा था।

वोह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा, कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे। क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे, और उसके क्रूस पर बहे लहू के द्वारा मेल-मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की। (कुलुस्सियों 1:15-20)।

यीशु मसीह को परमेश्वर ने अपने और सारी मानवता के बीच में एक मध्यस्थ और बिचवई नियुक्त किया है। अर्थात मनुष्य को आत्मिक जीवन के लिये जो कुछ भी आवश्यक है वे सभी वस्तुएं मसीह के "द्वारा" ही सम्भव हैं। निम्नलिखित बाइबल के हवालों में यह दर्शाया गया है कि अनुग्रह, सच्चाई, मुक्ति, जीवन, क्षमा, शांति, धर्मी ठहराया जाना, मृत्यु पर विजय तथा परमेश्वर के साथ हमारा मेल, सब कुछ केवल यीशु मसीह के "द्वारा" ही प्राप्त हो सकता है। (यूहन्ना 1:17; 3:17; 10:9; 14:6; प्रेरितों 10:43; 13:38; 15:11; रोमियों 1:5; 5:1,2,9,17,18,19,21; 8:37; 1 कुरिन्थियों 15:57; 2 कुरिन्थियों 3:4; 5:18; इफिसियों 1:5; 2:18; फिलिप्पियों 1:11; कुलुस्सियों 1:20; 1 थिस्सलुनीकियों 5:9; इब्रानियों 7:25; 1 यूहन्ना 4:9)।

प्रभु यीशु के महत्त्व और महानता की विशेषता को उन नामों

और पदवियों में भी देखा जा सकता है जिनके द्वारा बाइबल में उसे बार-बार सम्बोधित किया गया है, जिनमें शामिल हैं: मसीह (मत्ती 16:16), परमेश्वर (यूहन्ना 1:1; 20:28), परमेश्वर का पुत्र (यूहन्ना 3:16; 20:31; रोमियों 1:3), इमानुएल (मत्ती 1:23), परमेश्वर का मेमना (यूहन्ना 1:29), जगत की ज्योति (यूहन्ना 9:5), उद्धारकर्त्ता (लूका 2:11; यूहन्ना 4:42), वचन (यूहन्ना 1:1,14), अल्फ़ा और ओमेगा (प्रकाशित. 21:6), अच्छा चरवाहा (यूहन्ना 10:11), यहूदियों का राजा (मत्ती 27:37), प्रभु (प्रेरितों 2:36), राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु (प्रकाशित. 19:16), तेजोमय प्रभु (1 कुरिन्थियों 2:8), परमेश्वर का पवित्र जन (मरकुस 1:24), कोने का पत्थर (इफिसियों 2:20), नींव (1कुरिन्थियों 3:11) प्रधान रखवाला (1 पतरस 5:4) और प्रिय पुत्र (लूका 3:22; 9:35)।

इन्हीं कारणों से हम सब जगह सब लोगों से आग्रह करके कह रहे हैं कि यीशु मसीह में विश्वास लाएं और उसकी आज्ञा का पालन करें। ऐसा करने से आपकी कोई हानि नहीं होगी, पर आप बहुत कुछ पाएंगे। बाइबल में एक जगह हम पढ़ते हैं कि एक स्थान पर कई लोग यीशु को छोड़कर चले गए थे। तब यीशु ने अपने चेलों से पूछा था: "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" शमौन पतरस ने जवाब देकर कहा था: "हे प्रभु, हम किसके पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं; और हमने विश्वास किया है और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।" (यूहन्ना 6:66-69)। इस पुस्तक को क्यों लिखा गया है? इसका उत्तर हम प्रेरित यूहन्ना के ही शब्दों में यह कहकर दे सकते हैं, कि इसे इसलिये लिखा गया है "कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके, उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना 20:30-31)।

इस पुस्तक में लिखी बातों के बारे में यदि आप और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो प्रकाशक से इस पते पर सम्पर्क करें:

CHURCH OF CHRIST
Post Box No. 3815
New Delhi-110049

मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली-110049